अध्याय 5

किसान, जमींदार और राज्य—कृषि समाज और मुग़ल साम्राज्य

(लगभग सोलहवीं और सत्रहवीं सदी)

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

प्रश्न 1. सही विकल्प चुनकर लिखिए—

1. शाहजहाँ के शासनकाल में पंजाब की किस नहर की मरम्मत की गयी थी—
(a) हिरिया नहर (b) शाह नहर (c) यमुना नहर (d) उपरोक्त सभी।
2. पंजाब का मुगलकालीन व्यावसायिक कबीला था—
(a) भील (b) गुज्जर (c) अहीर (d) लोहानी।
3. अहोम राजाओं का संबंध किस राज्य से था—
(a) असम से (b) मेघालय से (c) नागालैण्ड से (d) अरुणाचल प्रदेश से।
4. भू-राजस्व की निर्धारित की गई राशि को क्या कहते थे—
(a) जमा (b) जिंस (c) हासिल (d) सनद।
5. मुगलकाल में मुख्यतः किस धातु के सिक्के प्रचलित थे—
(a) सोना (b) चाँदी (c) ताँबा (d) काँसा।
6. आइन-ए-अकबरी का लेखन कार्य कब पूर्ण हुआ—
(a) 1495 ई. (b) 1595 ई. (c) 1598 ई. (d) 1698 ई.।

उत्तर— 1. (b), 2. (d), 3. (a), 4. (a), 5. (b), 6. (c).

प्रश्न 2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए—

1. शाहजहाँ के शासनकाल में पंजाब में .... नहर की मरम्मत करवायी गयी।
2. मक्का भारत में .... के मार्ग से पहुँचा।
3. 18 वीं सदी में बंगाल के जमींदारों और दस्तकारों के बीच सेवा विनिमय व्यवस्था .... कहलाती थी।
4. मुगल साम्राज्य की अर्थव्यवस्था का मुख्य स्रोत .... था।
5. आइन के अंतिम भाग में अकबर के .... का संग्रह है।

उत्तर—1. शाह, 2. अफ्रीका और स्पेन, 3. जजमानी, 4. भू-राजस्व, 5. शुभ वचनों।

प्रश्न 3. एक शब्द / वाक्य में उत्तर दीजिए—

1. आइन-ए-अकबरी के लेखक कौन थे ?
2. अबुल फ़जल किस मुगल शासक का दरबारी इतिहासकार था ?
3. अधिक राजस्व देने वाली फसलों के लिए किस शब्द का प्रयोग होता था ?
4. मक्का भारत में किस मार्ग से पहुँचा ?
5. मुग़लकाल में परिवार किस प्रकार के होते थे ?
6. भू-राजस्व के लिए स्थापित प्रशासनिक तंत्र का मुख्य केन्द्र क्या था ?
7. मुग़ल साम्राज्य की अर्थव्यवस्था का मुख्य स्रोत क्या था ?
8. राजस्व वसूली करने वाले अधिकारी क्या कहलाते थे ?
9. मुग़लकाल में तुर्क में स्थापित समकालीन साम्राज्य का क्या नाम था ?

Scanned with CamScanner

10. 1690 ई. भारत यात्रा करने वाले इटली के विदेशी यात्री का नाम लिखिए।
11. आइन-ए-अकबरी किस किताब का एक हिस्सा है ?
12. अंतिम मुगल बादशाह का क्या नाम था ?

उत्तर—1. अबुल फ़ज़ल, 2. अकबर, 3. जिन्स-ए-कामिल, 4. अफ्रीका और स्पेन के मार्ग से, 5. पितृसत्तात्मक या पुरुष प्रधान, 6. दीवान, 7. भू-राजस्व, 8. अमील-गुजार, 9. ऑटोमन साम्राज्य, 10. जोवान्नी कारेरी, 11. अकबरनामा, 12. बहादुर शाह ज़फ़र।

प्रश्न 4. उचित संबंध जोड़िए—

(अ)	(ब)
1. आइन-ए-अकबरी	(a) किसान
2. रैयत या मुजरियान	(b) कपास और गन्ना
3. जिन्स-ए-कामिल	(c) अबुल फ़ज़ल
4. अमील गुजार	(d) गाँव का मुखिया
5. मुकद्दम या मंडल	(e) कर वसूलने वाला अधिकारी।

उत्तर—1. (c), 2. (a), 3. (b), 4. (e), 5. (d).

प्रश्न 5. सत्य/असत्य लिखिए—

1. मुगल काल में खुद-काश्त व पाहि-काश्त दो प्रकार के किसान थे।
2. जमींदारों की समृद्धि का आधार उनकी मिल्कियत थी।
3. भूमिहार भद्रजनों में महिलाओं का पुश्तैनी संपत्ति का अधिकार प्राप्त था।
4. आइन-ए-अकबरी, दस संशोधनों के बाद पूर्ण हुआ था।
5. मुगलकाल में जंगल बदमाशों को शरण देने वाला स्थान था।
6. आइन के पहले भाग में सैनिक व नागरिक प्रशासन का विवरण है।

उत्तर—1. सत्य, 2. सत्य, 3. सत्य, 4. असत्य, 5. सत्य, 6. असत्य।

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. सोलहवीं-सत्रहवीं शताब्दी में ग्रामीण समाज का निर्माण कैसे होता था ?

उत्तर—सोलहवीं-सत्रहवीं शताब्दी के दौरान करीब-करीब 85 प्रतिशत भारतीय जनता गाँवों में निवास करती थी। छोटे खेतिहर और भूमिहर संभ्रांत दोनों ही कृषि उत्पादन से जुड़े थे और दोनों ही फसल के हिस्सों के दावेदार थे। इससे उनके बीच सहयोग, प्रतियोगिता और संघर्ष के रिश्ते बने। खेती से जुड़े इन्हीं रिश्तों के माध्यम से ग्रामीण समाज का निर्माण होता था।

प्रश्न 2. मुगल साम्राज्य के राजस्व अधिकारी ग्रामीण समाज पर नियंत्रण का प्रयास क्यों करता था?

उत्तर—मुगल साम्राज्य के राजस्व अधिकारी, जैसे राजस्व निर्धारित करने वाले, राजस्व वसूली करने वाले या हिसाब रखने वाले ग्रामीण समाज पर नियंत्रण का प्रयास करते थे। इसके माध्यम से वे यह तसल्ली करना चाहते थे कि खेतों की जुताई हो और राज्य को उपज में से अपना हिस्सा समय पर मिल जाए।

प्रश्न 3. भारतीय समाज में तंबाकू का प्रसार किस प्रकार हुआ ?

उत्तर—तंबाकू का पौधा सर्वप्रथम दक्कन पहुँचा और वहाँ से सत्रहवीं सदी के शुरुआती वर्षों में इसे भारत लाया गया। आइन के फसलों की सूची में तंबाकू का जिक्र नहीं है। अकबर और उसके अभिजातों ने 1604 ई. में पहली बार तंबाकू देखा। शायद इसी काल में तम्बाकू का धूम्रपान करने की लत ने ज़ोर पकड़ा। जहाँगीर ने इस बुरी आदत के प्रसार को रोकने के लिए इस पर पाबंदी लगा दी। किन्तु इस पाबंदी का कोई असर नहीं हुआ और सत्रहवीं सदी के अंत तक तंबाकू पूरे भारत में खेती, उपयोग और व्यापार की मुख्य वस्तु था।

प्रश्न 4. मुगलकालीन भारत में कृषि के लगातार विकास में सहायक किन्हीं चार कारकों का उल्लेख कीजिए।

Scanned with CamScanner

मुगलकालीन भारत में कृषि के विकास में सहायक चार कारक हैं—

उत्तर—मुगलकालीन भारत में कृषि के विकास में सहायक चार कारक हैं—
(1) जमीन की अधिकता, (2) मजदूरों की उपलब्धता, (3) किसानों की गतिशीलता, (4) सिंचाई के कृत्रिम साधनों का विकास।

प्रश्न 5. कृषि की समृद्धि का भारत की आबादी पर क्या प्रभाव पड़ा ?

उत्तर—कृषि उत्पादन के विविध और लचीले तरीकों के कारण मुगलकालीन भारत की आबादी धीरे-धीरे बढ़ने लगी। आर्थिक इतिहासकारों की गणना के अनुसार, समय-समय पर होने वाली भूखमरी और महामारी के बावजूद 1600 से 1700 के बीच भारत की आबादी लगभग 5 करोड़ बढ़ गई। 200 वर्षों में यह करीब-करीब 33 फीसदी बढ़ गई।

प्रश्न 6. सत्रहवीं शताब्दी में कौन-सी विदेशी फसलें भारत आयीं ?

उत्तर—सत्रहवीं शताब्दी में दुनिया के अलग-अलग हिस्सों से कई नयी फसलें भारतीय उपमहाद्वीप में आयीं। भारत में मक्का अफ्रीका और स्पेन के रास्ते आया और सत्रहवीं सदी तक पश्चिमी भारत की मुख्य फसलों में एक बन गया। टमाटर, आलू, मिर्च, जैसी सब्जियाँ और अनानास, पपीता जैसे फल विदेशों से भारत आए।

प्रश्न 7. जिन्स-ए-कामिल क्या है ? उदाहरण दीजिए।

उत्तर—मुगल साम्राज्य में कुछ ऐसी फसलें उगाई जाती थीं, जो राजस्व की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण थी, क्योंकि इनसे राज्य को कर मिलता था। इन्हें जिन्स-ए-कामिल कहा जाता था। कपास और गन्ना जैसी फसलें बेहतरीन जिन्स-ए-कामिल थी। मध्य भारत और दक्कनी पठार के फैले हुए भाग पर कपास उगाई जाती थी जबकि बंगाल चीनी के लिए मशहूर था।

प्रश्न 8. मुकद्दम या मंडल किसे कहा जाता था ?

उत्तर—मुगलकालीन भारत में गाँवों की पंचायत का मुखिया मुकद्दम या मंडल कहलाता था। मुखिया का चुनाव बुजुर्गों की आम सहमति से होता था और इस चुनाव के बाद उन्हें जमींदार से मंजूरी लेनी पड़ती थी। मुखिया अपने पद पर तभी तक बना रहता था जब तक गाँव के बुजुर्गों को उस पर भरोसा था। ऐसा नहीं होने पर बुजुर्ग उसे बर्खास्त कर सकते थे।

प्रश्न 9. जजमानी व्यवस्था किसे कहते थे ?

उत्तर—अठारहवीं सदी के स्रोतों के अनुसार, बंगाल में जमींदार लोहारों, बढ़ई और सोनारों को उनकी सेवा के बदले रोज का भत्ता और खाने के लिए नकदी देते थे। इसे जजमानी व्यवस्था कहते थे।

प्रश्न 10. सराफ किन्हें कहते थे ?

उत्तर—मुद्रा की फेर-बदल करने वाले व्यापारी सराफ कहलाते थे। एक बैंकर की तरह सराफ हवाला भुगतान करते थे और अपनी मर्जी के अनुसार पैसे मुकाबले रुपये की या कौड़ियों के मुकाबले पैसे की कीमत बढ़ा देते थे।

प्रश्न 11. सोलहवीं और सत्रहवीं सदी में कौन-से साम्राज्य सत्ता और संसाधनों पर अपनी मजबूत पकड़ बनाने में कामयाब रहे ?

अथवा, **मुगलकालीन अन्य चार बड़े साम्राज्यों के नाम लिखिए।**

उत्तर—सोलहवीं और सत्रहवीं सदी में निम्नलिखित साम्राज्य सत्ता और संसाधनों पर अपनी पकड़ बनाने में सफल रहे—

(1) भारत में मुगल साम्राज्य, (2) चीन में मिंग साम्राज्य, (3) ईरान में सफावी साम्राज्य, (4) तुर्की में ऑटोमन साम्राज्य।

प्रश्न 12. अकबरनामा का निर्माण किस प्रकार किया गया ?

उत्तर—अकबरनामा तीन जिल्दों में रचा गया था—

(1) पहली दो जिल्दों में ऐतिहासिक विवरण प्रस्तुत किया गया था।

(2) तीसरी जिल्द आइन-ए-अकबरी को शाही नियम कानून के सारांश और साम्राज्य के एक राजपत्र के रूप में संकलित किया गया था।

Scanned with CamScanner

प्रश्न 13. आइन का अनुवाद कब और किस प्रकार किया गया है ?

उत्तर—आइन के महत्व के कारण कई विद्वानों ने इसका अनुवाद किया है। हेनरी ब्लॉकमेन ने इसका संपादन किया और कलकत्ता (कोलकाता) के एशियाटिक सोसायटी ने अपनी बिब्लियोथिका शृंखला में इसे छापा। इस किताब का तीन खंडों में अनुवाद अंग्रेजी किया गया। पहले खंड का मानक अंग्रेजी अनुवाद ब्लॉकमेन (1873) ने और बाकी दो खंडों का एच. एस. जैरेट (1891 ई. और 1894 ई.) ने किया है।

प्रश्न 14. मनसबदारी व्यवस्था पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

उत्तर—**मनसबदारी व्यवस्था**—मुगल प्रशासनिक व्यवस्था के शीर्ष पर एक सैनिक-नौकरशाही तंत्र था, जिसे मनसबदारी व्यवस्था कहते थे। इन पर राज्य के सैनिक व नागरिक मामलों की जिम्मेदारी थी। कुछ मनसबदारों को नकदी भुगतान किया जाता था, जबकि उनमें से अधिकांश को साम्राज्य के अलग-अलग हिस्सों में राजस्व के आवंटन के जरिए भुगतान किया जाता था।

प्रश्न 15. अमीन किसे कहा जाता था ?

उत्तर—अमीन मुगलकालीन प्रशासनिक व्यवस्था में एक मुलाजिम था, जिसकी जिम्मेदारी यह सुनिश्चित करना था कि प्रांतों में राजकीय आदेशों और नियमों कानूनों का पालन हो रहा है।

प्रश्न 16. जमींदारों की बढ़ी हुई हैसियत के क्या कारण थे ?

उत्तर—जमींदारों की बढ़ी हुई हैसियत के कारण थे, उनकी विस्तृत निजी जमीन, कर वसूल करने का अधिकार तथा व्यक्तिगत सैन्य संसाधन।

प्रश्न 17. 'दीवान-ए-आम' क्या था ?

उत्तर—दीवान-ए-आम एक सार्वजनिक सभा-भवन था, जिसमें सरकार के प्राथमिक कार्य संपादित किए जाते थे।

प्रश्न 18. 'पेशकश' से क्या आशय था ?

उत्तर—पेशकश मुगल राज्य द्वारा ली जाने वाली एक तरह की भेंट थी।

लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. सोलहवीं-सत्रहवीं शताब्दी में ग्रामीण जीवन की संक्षिप्त जानकारी दीजिए।

उत्तर—सोलहवीं-सत्रहवीं शताब्दी में गाँवों में छोटे खेतिहर और भूमिहर संभ्रात दोनों ही कृषि उत्पादन से जुड़े थे। अत: उनके बीच सहयोग, प्रतियोगिता और संघर्ष की भावना उपस्थित रहती थी। इन्हीं संबंधों के परिणामस्वरूप ग्रामीण समाज का निर्माण हुआ। ग्रामीण समाज की मुख्य इकाई किसान थे, जो वर्ष भर अलग-अलग मौसम में वो सभी काम करते थे, जिससे फसलों का उत्पादन होता था, जैसे—जमीन की जुताई, बीज बोना और फसल पकने पर कटाई। इसके अलावा वे उन वस्तुओं के उत्पादन में भी सम्मिलित होते थे, जो कृषि आधारित थे, जैसे कि शक्कर, तेल आदि।

लेकिन कृषि कार्य केवल मैदानी इलाकों तक ही सीमित नहीं थे। बल्कि कई ऐसे क्षेत्र, जैसे सूखी जमीन के विशाल हिस्सों से पहाड़ियों वाले इलाकों में भी अलग-अलग तरीकों से कृषि की जाती थी। इस सामाजिक भिन्नता के साथ-साथ ग्रामीण परिवेशों में भौगोलिक विविधता पाई जाती थी।

प्रश्न 2. सत्रहवीं शताब्दी में किसानों के दो मुख्य वर्ग क्या-क्या थे ?

उत्तर—मुग़लकाल के भारतीय फारसी किसानों के लिए आमतौर पर रैयत (बहुवचन रिआया) या मुजरियान शब्द का उपयोग करते थे। विभिन्न स्रोतों में किसान या आसामी जैसे शब्द का भी प्रयोग हुआ है। इस काल के स्रोत मुख्यत: दो प्रकार के किसानों की जानकारी देते हैं—खुद-काश्त तथा पाहि-काश्त।

1. खुद-काश्त—किसानों का ऐसा समूह, जो उन्हीं गाँवों में रहते थे, जहाँ उनकी जमीनें थीं, खुद काश्त कहलाते थे।

2. पाहि-काश्त—पाहि-काश्त वे खेतिहर किसान थे, जो दूसरे गाँवों से ठेके पर खेती करने आते थे। लोग अपनी मर्जी से पाहि-काश्त बनते थे। (उदाहरणार्थ, यदि करों की शर्तें दूसरे गाँवों में अच्छी मिले) या मजबूरन भी (उदाहरणार्थ, अकाल या भूखमरी के बाद आर्थिक परेशानी से)।

Scanned with CamScanner

प्रश्न 3. सत्रहवीं शताब्दी के दौरान मुग़ल साम्राज्य के विभिन्न क्षेत्रों में एक किसानों की स्थिति का वर्णन कीजिए।

उत्तर—सत्रहवीं शताब्दी के दौरान उत्तर भारत में एक औसत किसान के पास शायद ही कभी एक जोड़ी बैल और दो हल से ज्यादा कुछ होता था। ज्यादातर किसानों के पास इससे कम होता था। गुजरात में जिन किसानों के पास 6 एकड़ के करीब जमीन थी, वे समृद्ध माने जाते थे, दूसरी तरफ बंगाल में एक औसत किसान की जमीन की ऊपरी सीमा 5 एकड़ थी, 10 एकड़ जमीन वाले आसामी को अमीर समझा जाता था। खेती व्यक्तिगत मिल्कियत के सिद्धांत पर आधारित थी। किसानों की जमीनें उसी तरह खरीदी और बेची जाती थीं जैसे दूसरे संपत्ति मालिकों के।

उन्नीसवीं सदी के दिल्ली आगरा इलाके में किसानों की मिल्कियत का यह विवरण सत्रहवीं सदी पर भी उतना ही लागू होता है, हल जोतने वाले खेतिहर किसान हर जमीन की हदों पर मिट्टी, ईंट और काँटों से पहचान के लिए निशान लगाते हैं और जमीन के ऐसे हजारों टुकड़े किसी भी गाँव में देखे जा सकते हैं।

प्रश्न 4. पंचायत के आय के स्रोत क्या थे ? इसका क्या महत्व था ?

उत्तर—पंचायत की आय का मुख्य स्रोत वह आम खजाना था, जिसमें गाँव के प्रत्येक व्यक्ति का योगदान होता था। इस आम खजाने का प्रयोग निम्न कार्यों के लिए किया जाता था—

(1) गाँव में समय-समय पर आने वाले अधिकारियों की खातिरदारी का खर्चा इसी खजाने से किया जाता था। (2) इस कोष के माध्यम से मुकद्दम तथा गाँव के चौकीदार को वेतन दिया जाता था। (3) इस कोष का इस्तेमाल प्राकृतिक विपदाओं से निपटने के लिए किया जाता था। (4) इस कोष का उपयोग ऐसे सामुदायिक कार्यों के लिए भी किया जाता था, जो किसान स्वयं नहीं कर सकते थे, जैसे कि मिट्टी के छोटे-छोटे बाँध बनाना या नहर खोदना।

प्रश्न 5. सत्रहवीं सदी में पैदावार में विभिन्नता पाए जाने के क्या कारण थे ?

उत्तर—मुग़लकालीन भारत में मुख्य रूप से मौसम के दो चक्रों के दौरान खेती की जाती थी, एक खरीफ (पतझड़ में) और दूसरी रबी (बसंत में)। इस प्रकार यदि सूखे इलाके और बंजर जमीन को छोड़ दिया जाए तो, अधिकांश क्षेत्रों में वर्ष में कम से दो फसलें उगायी जाती थीं। जिन स्थानों पर बारिश या सिंचाई के साधन उपलब्ध थे, वहाँ साल में तीन फसलें भी उगाई जाती थीं। इसके अतिरिक्त सोलहवीं-सत्रहवीं सदी में दुनिया के कई अलग-अलग हिस्सों से नयी फसलें भारतीय उपमहाद्वीप पहुँची। इसलिए पैदावार में बहुत अधिक विभिन्नता पाई जाती थी। उदाहरण के लिए, आइन के अनुसार दोनों मौसम मिलाकर मुग़ल प्रांत आगरा में 39 किस्म की फसलें उगाई जाती थीं, जबकि दिल्ली प्रांत में 43 फसलों की पैदावार होती थी। बंगाल में सिर्फ चावल की 50 किस्में उगाई जाती थीं।

प्रश्न 6. जाति पंचायतें क्या थीं ? इनके मुख्य कार्य क्या थे ?

उत्तर—जाति पंचायत—ग्राम पंचायत के अलावा प्रत्येक गाँव में हर जाति की अपनी पंचायत होती थी, जिसे जाति पंचायत कहा जाता था।

जाति पंचायत के कार्य—(1) जाति पंचायतें समाज में काफी ताकतवर होती थीं। उदाहरण के लिए, राजस्थान में जाति पंचायतें अलग-अलग जातियों के लोगों के बीच दीवानी के झगड़ों का निपटारा करती थीं। (2) ये पंचायतें जमीन से जुड़े दावेदारियों के झगड़े सुलझाती थीं। (3) जाति पंचायतें ये तय करती थीं कि शादियाँ जातिगत मानदंडों के अनुसार हो रही हैं या नहीं। (4) जाति पंचायतें गाँव के आयोजनों में कर्मकांडीय वर्चस्व का भी निर्धारण करती थीं। (5) जाति पंचायतें अपने सदस्यों के हितों की रक्षा करती थीं और उनके प्रति होने वाले अन्याय के विरुद्ध आवाज़ उठाती थीं।

फौज़दारी न्याय को छोड़ दिया जाए तो ज्यादातर मामलों में राज्य जाति पंचायत के फैसलों को ही मानता था।

प्रश्न 7. भारतीय ग्रामीण समाज में क्या विषमताएँ व्याप्त थीं ? गाँवों में आर्थिक स्तर पर क्या परिवर्तन हुए ?

***अथवा,* मध्यकालीन ग्रामीण समुदाय का वर्णन एक छोटे गणराज्य के रूप में किस प्रकार किया गया है?**

Scanned with CamScanner

उत्तर—उन्नीसवीं सदी के कुछ अंग्रेज अफसरों ने भारतीय गाँवों को एक ऐसे छोटे गणराज्य के रूप में देखा, जहाँ लोग सामूहिक स्तर पर भाईचारे के साथ संसाधन और श्रम का बँटवारा करते थे लेकिन समाज में कुछ विषमताएँ उस समय भी व्याप्त थीं।

विषमताएँ—भारतीय गाँवों में मध्यकाल में सामाजिक बराबरी देखने को नहीं मिलती थी। संपत्ति के रूप में व्यक्तिगत मिल्कियत होती थी, साथ ही जाति और जेंडर (सामाजिक लिंग) के नाम पर समाज में गहरी विषमताएँ थीं। कुछ ताकतवर लोग गाँव के मसलों पर फैसले लेते थे और कमजोर वर्गों का शोषण करते थे। न्याय करने का अधिकार भी उन्हीं को मिला हुआ था।

गाँवों की आर्थिक स्थिति में परिवर्तन—इस काल की सबसे महत्वपूर्ण बात यह थी कि गाँवों और शहरों के बीच होने वाले व्यापार की वजह से गाँवों में भी नकद के रिश्ते फैल चुके थे। मुगलों के केंद्रीय इलाकों में कर की गणना और वसूली भी नकद में की जाती थी। जो दस्तकार निर्यात के उत्पादन करते थे, उन्हें उन्हीं मजदूरी या पूर्व भुगतान नकद में ही किया जाता था। इसी प्रकार कपास, रेशम या नील जैसी व्यावसायिक फसलें पैदा करने वालों का भुगतान भी नकद ही होता था।

प्रश्न 8. कृषि इतिहास लिखने के लिए आइन को स्रोत के रूप में इस्तेमाल करने में क्या समस्याएँ हैं ? इतिहासकार इन समस्याओं से कैसे निपटते हैं ? **(NCERT)**

उत्तर—आइन-ए-अकबरी, अकबर के दरबारी इतिहासकार अबुल फज़ल के द्वारा लिखा गया एक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक स्रोत है, जो मध्यकाल के कृषि इतिहास को समझने के लिए एक महत्वपूर्ण दस्तावेज है। किन्तु इसे स्रोत के रूप में इस्तेमाल करने में कई समस्याएँ थीं, जो इस प्रकार हैं—

(1) आइन के संख्यात्मक आँकड़ों में कई विषमताएँ हैं। आँकड़ों के जोड़ में कई गलतियाँ हैं।

(2) आइन में सभी सूबों के आँकड़े एक समान रूप से एकत्रित नहीं किए हैं। उदाहरण के लिए जहाँ कई सूबों के लिए जमींदारों की जाति के अनुसार विस्तृत सूचनाएँ संकलित की गई हैं, वहीं बंगाल और उड़ीसा के लिए ऐसी कोई जानकारी मौजूद नहीं है। सूबों से एकत्रित कीमतों और मजदूरी जैसे महत्वपूर्ण आँकड़े भी सही तरीके से दर्ज नहीं किए गए हैं।

(3) आइन से जुड़ी सबसे प्रमुख समस्या यह है कि इसे केवल सत्ता के उच्च वर्गों के दृष्टिकोण से लिखा गया है। आइन का प्रमुख उद्देश्य मुगल साम्राज्य का ऐसा विवरण पेश करना था, जहाँ एक मजबूत सत्ताधारी वर्ग सामाजिक मेल-जोल बनाकर रखता था। जबकि इस काल में प्राप्त अन्य दस्तावेज इन तथ्यों को नकारते हैं।

समस्याओं का समाधान—इतिहासकारों के पास इन समस्याओं से निपटने के लिए आइन के अतिरिक्त अन्य कई स्रोत हैं। इनमें से कई स्रोत मुगलों की राजधानी से दूर के इलाकों में लिखे गए थे, जिनमें सत्रहवीं व अठारहवीं सदियों में गुजरात, महाराष्ट्र और राजस्थान से मिलने वाले दस्तावेज़ शामिल हैं। ये स्रोत सरकार की आमदनी की विस्तृत जानकारी देते हैं।

इसके अलावा ईस्ट इंडिया कंपनी के बहुत सारे दस्तावेज भी हैं, जो पूर्वी भारत में कृषि संबंधों की उपयोगी जानकारी देते हैं। इन दस्तावेजों में किसानों, जमींदारों और राज्यों के बीच होने वाले झगड़े दर्ज हैं। साथ ही यह स्रोत यह समझने में भी सहायता करते हैं कि किसानों का राज्य के प्रति क्या दृष्टिकोण था और उन्हें राज्य से कैसे न्याय की उम्मीद थी।

प्रश्न 9. सोलहवीं-सत्रहवीं सदी में कृषि उत्पादन को किस हद तक महज गुजारे के लिए खेती कह सकते हैं ? अपने उत्तर के कारण स्पष्ट कीजिए। **(NCERT)**

उत्तर—सोलहवीं-सत्रहवीं शताब्दी में मुख्यत: दैनिक आहार की खेती पर बल दिया जाता था, इसलिए चावल, गेहूँ, बाजरा जैसे अनाजों की प्रमुख रूप से खेती की जाती थी। किन्तु इसका तात्पर्य यह नहीं था कि मध्यकाल में खेती सिर्फ गुजारा करने के लिए की जाती थी। इस संबंध में निम्नलिखित तर्क दिए जा सकते हैं—

(1) इस काल में मौसम के दो मुख्य चक्रों के दौरान खेती की जाती थी—खरीफ़ (पतझड़ में) और रबी (बसंत में)। सूखे इलाकों को छोड़कर शेष सभी स्थानों में साल में कम-से-कम दो फसलें उगाई जाती थीं और सिंचाई के साधन उपलब्ध होने पर कई स्थानों में साल में तीन फसलें भी उगाई जाती थीं। इन कारणों से पैदावार में भारी विविधता पाई जाती थी।

Scanned with CamScanner

(2) मध्यकालीन स्रोतों में जिन्स-ए-कामिल फसलों (सर्वोत्तम फसल) का भी विवरण मिलता है। कपास और गन्ना जैसी फसलें बेहतरीन जिन्स-ए-कामिल थीं। मुगल राज्य भी किसानों को ऐसी फसलों की खेती करने के लिए बढ़ावा देते थे, क्योंकि इनसे राज्य को ज्यादा कर मिलता था।

इस प्रकार मध्यकाल में कृषि उत्पादन केवल पेट भरने तक सीमित नहीं था। एक औसत किसान की जमीन पर पेट भरने के लिए होने वाला उत्पादन और व्यापार के लिए किया जाने वाला उत्पादन एक दूसरे से जुड़े थे।

प्रश्न 10. कृषि उत्पादन में महिलाओं की भूमिका का विवरण दीजिए। (NCERT)

उत्तर—कृषि समाज में उत्पादन प्रक्रिया में महिलाएँ और पुरुष विशेष भूमिकाएँ निभाते हैं। मध्यकाल में कृषि उत्पादन में महिलाएँ और पुरुष उत्पादन प्रक्रिया में कंधे से कंधा मिलाकर कार्य करते थे। उत्पादन प्रक्रिया में महिलाओं की भूमिका को निम्न बिन्दुओं के माध्यम से समझा जा सकता है—

(1) मध्यकाल में पुरुष खेत जोतते थे व हल चलाते थे, जबकि महिलाएँ बुआई-निराई और कटाई के साथ-साथ पकी हुई फसल का दाना निकालने का काम करती थीं।

(2) जब मध्यकालीन भारतीय कृषि में छोटी-छोटी ग्रामीण इकाइयों का और व्यक्तिगत खेती का विकास हुआ, तब घर-परिवार के संसाधन और श्रम उत्पादन की बुनियाद बने। ऐसी स्थिति में उत्पादन के विभिन्न चरणों में लिंग भेद के स्थान पर महिलाओं के श्रम को महत्व दिया जाने लगा।

(3) सूत कातने, बरतन बनाने के लिए मिट्टी को साफ करने और गूँथने और कपड़ों पर कढ़ाई जैसे दस्तकारी के काम महिलाओं के श्रम पर निर्भर थे।

(4) किसी वस्तु का जितना वाणिज्यीकरण होता था, उसके उत्पादन के लिए महिलाओं के श्रम की उतनी ही माँग होती थी। किसान और दस्तकार महिलाएँ जरूरत पड़ने पर न केवल खेतों में काम करती थीं, बल्कि नियोक्ताओं के घरों और बाजारों में भी जाती थीं।

(5) चूँकि समाज श्रम पर निर्भर था, इसलिए अपनी प्रजनन क्षमता के कारण महिलाओं को एक महत्वपूर्ण संसाधन के रूप में देखा जाता था।

प्रश्न 11. विचाराधीन काल में मौद्रिक कारोबार की अहमियत की विवेचना उदाहरण देकर दीजिए। (NCERT)

उत्तर—(1) मध्यकालीन भारत में कई नयी वस्तुओं का व्यापार प्रारंभ हुआ, साथ ही भारत से निर्यात होने वाली वस्तुओं का भुगतान करने के लिए एशिया में भारी मात्रा में चाँदी आई, जिसका अधिकांश भाग भारत पहुँचा। नतीजतन, सोलहवीं से अठारहवीं शताब्दी के बीच भारत में धातु मुद्रा विशेषकर चाँदी के रुपयों की उपलब्धता बनी रही। इससे एक ओर अर्थव्यवस्था में मुद्रा संचार और सिक्कों की ढलाई का अभूतपूर्व विकास हुआ। इसने मौद्रिक कारोबार को बढ़ावा दिया, जो मुगलकाल में काफी अधिक महत्वपूर्ण था।

(2) सोलहवीं शताब्दी के प्रारंभ से ही किसानों से भू-राजस्व का संग्रहण नकद के रूप में किया जाने लगा। जिसके परिणामस्वरूप गाँवों में मौद्रिक कारोबार के महत्व में वृद्धि हुई।

(3) गाँवों और शहरों के मध्य होने वाले व्यापार के कारण गाँवों में भी नकद कारोबार बढ़ने लगे थे। मुगल साम्राज्य के केंद्रीय इलाकों में कर की गणना और वसूली भी नकद में की जाती थी।

(4) दस्तकारों द्वारा निर्यात के लिए किए जाने वाले उत्पादन की मजदूरी का भुगतान भी नकद में ही किया जाने लगा, जिसके कारण श्रमिकों को उनका दैनिक भुगतान करना सरल हो गया।

(5) मौद्रिक कारोबार के फलस्वरूप मुगलकालीन अर्थव्यवस्था में मुद्रा संचरण को बढ़ावा मिला तथा सिक्का ढलाई के कार्य का विस्तार हुआ। वहीं साम्राज्य को अधिकाधिक राजस्व नकद के रूप में मिलने लगा।

प्रश्न 12. उन सबूतों की जाँच कीजिए जो ये सुझाते हैं कि मुगल राजकोषीय व्यवस्था के लिए भू-राजस्व बहुत महत्वपूर्ण था। (NCERT)

उत्तर—मुगल सम्राट अपने साम्राज्य को सुदृढ़ वित्तीय आधार प्रदान करने का सदैव प्रयत्न करते रहे। ज़जिया, ज़कात, खिराज जैसे कर, अधीन राजाओं और मनसबदारों से प्राप्त होने वाले उपहार तथा राज्य द्वारा चलाए जाने वाले उद्योग राज्य की संपत्ति के महत्वपूर्ण स्रोत थे। किंतु इन सभी संपत्ति के स्रोतों में भू-राजस्व

Scanned with CamScanner

सबसे अधिक महत्वपूर्ण था। जमीन से मिलने वाला राजस्व मुगल साम्राज्य की आर्थिक बुनियाद थी। आइन एवं मुगलकाल से प्राप्त अन्य दरबारी स्रोत भी मुगल राजकोषीय व्यवस्था में भू राजस्व के महत्व पर प्रकाश डालते हैं इसीलिए कृषि नियंत्रण रखने और तेजी से फैलते साम्राज्य के इलाकों में राजस्व के आंकलन व वसूली के लिए एक प्रशासनिक तंत्र का निर्माण करना आवश्यक था। इस तंत्र में दीवान भी सम्मिलित थे, जिन पर पूरे राज्य की वित्तीय व्यवस्था की देखरेख की जिम्मेदारी थी। इस प्रकार हिसाब-किताब रखने वाले तथा राजस्व अधिकारी कृषि की दुनिया में दाखिल हुए और उन्होंने कृषि संबंधों को एक नया स्वरूप प्रदान किया।

भू-राजस्व व्यवस्था—मुगल काल में भू-राजस्व की व्यवस्था के दो चरण थे—पहला कर निर्धारण और दूसरा वास्तविक वसूली। निर्धारित रकम "जमा" और वसूली गई वास्तविक रकम "हासिल" कहलाती थी। अमील गुजार या राजस्व वसूली करने वालों को यह आदेश दिया गया कि, उन्हें कोशिश करनी चाहिए कि खेतिहर नकद भुगतान करे, वहीं फसलों में भुगतान का विकल्प भी खुला रहे।

प्रश्न 13. अकबर के शासनकाल में भूमि का वर्गीकरण किस प्रकार किया गया था ?

उत्तर—अकबर ने अपनी गहरी दूरदर्शिता के साथ जमीनों का वर्गीकरण किया और प्रत्येक वर्ग की जमीन के लिए अलग-अलग राजस्व निर्धारित किया, जिसका वितरण आइन में भी दिया गया है।

1. पोलज—पोलज वह जमीन है, जिसमें एक के बाद एक हर फसल की खेती होती है और जिसे कभी खाली नहीं छोड़ा जाता।

2. परौती—परौती वह जमीन है जिस पर कुछ दिनों के लिए खेती रोक दी जाती है ताकि वह अपनी खोयी उपजाऊ क्षमता वापस पा सके।

3. चचर—चचर वह जमीन है, जो तीन या चार वर्षों तक खाली रहती है।

4. बंजर—बंजर वह जमीन है, जिस पर पाँच या उससे ज्यादा वर्षों से खेती नहीं की गई हो।

पहली दो प्रकार की जमीनों के तीन प्रकार हैं—अच्छी, मध्यम और खराब। वे हर किस्म के जमीन के उत्पाद के जोड़ देते हैं और इसका तीसरा हिस्सा मध्यम उत्पाद माना जाता है, जिसका एक तिहाई हिस्सा शाही शुल्क लिया जाता था।

प्रश्न 14. मुगलकालीन साम्राज्य में जंगली शब्द का प्रयोग किनके लिए किया जाता था ?

उत्तर—समसामयिक स्रोतों के अनुसार, सोलहवीं सत्रहवीं शताब्दी में लगभग 40 फीसदी हिस्से में जंगलों का फैलाव था। समसामयिक रचनाएँ जंगल में रहने वाले लोगों के लिए जंगली शब्द का इस्तेमाल करती हैं। लेकिन आज इस शब्द के प्रचलित अर्थ के अनुसार उस काल में जंगली होने का मतलब असभ्य होना नहीं था। उन दिनों जंगली शब्द का प्रयोग प्राय: ऐसे लोगों के लिए होता था। जिनका गुजारा जंगल के उत्पादों, शिकार तथा स्थानांतरित कृषि से होता था। ये कार्य मौसम के अनुसार होते थे। उदाहरण के तौर पर भीलों में बसंत के मौसम में जंगल के उत्पाद इकट्ठे किए जाते थे, गर्मियों में मछलियाँ पकड़ी जाती थीं और शरद व जाड़े के महीनों में शिकार किया जाता था। यह सिलसिला लगातार गतिशीलता की बुनियाद पर खड़ा था और इस बुनियाद को मजबूत भी करता था। लगातार एक स्थान से दूसरे स्थान घूमते रहना, जंगल में रहने वाले कबीलों की एक प्रमुख विशेषता थी।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. सोलहवीं-सत्रहवीं सदी के कृषि इतिहास को जानने के मुख्य ऐतिहासिक स्रोत क्या हैं ?

उत्तर—सोलहवीं-सत्रहवीं सदी में किसान अपने बारे में नहीं लिखा करते थे, इसलिए खेतों में काम करने वालों के माध्यम से हमें ग्रामीण समाज के क्रियाकलापों की जानकारी प्राप्त नहीं होती थी। इस काल में कृषि इतिहास जानने के मुख्यत: दो स्रोत थे—

1. मुगलकालीन दरबार के स्रोत—सोलहवीं-सत्रहवीं सदी के कृषि इतिहास को जानने के मुख्य स्रोत वे ऐतिहासिक ग्रंथ तथा दस्तावेज हैं, जो मुगल दरबार की निगरानी में लिखे गए थे। इनमें से सबसे महत्वपूर्ण ग्रंथ अकबर के दरबारी इतिहासकार अबुल फज़ल द्वारा लिखा गया आइन-ए-अकबरी (संक्षेप में आइन) था। खेतों की नियमित जुताई की तसल्ली करने के लिए, राज्य के नुमाइंदों द्वारा करों की वसूली के लिए और राज्य व

Scanned with CamScanner

जमींदारों के बीच संबंधों के नियमन के लिए जो व्यवस्थाएँ राज्य ने की थी, उसका विवरण इस ग्रंथ में बहुत ही सावधानी से प्रस्तुत किया गया है।

आइन मुग़ल साम्राज्य का ऐसा विवरण देता है, जिसमें सत्ताधारी वर्ग सामाजिक मेल-जोल बनाकर रखता था। आइन में मुग़ल साम्राज्य के खिलाफ किसी भी प्रकार की बगावत या किसी किस्म की स्व.यत्त सत्ता की दावेदारी की जानकारी नहीं है। दूसरे शब्दों में, यह ग्रंथ केवल सत्ता के ऊँचे गलियारों के नजरिए से लिखा गया है, जो मुग़लकालीन समाज में कृषकों की वास्तविक स्थिति की जानकारी नहीं देता।

2. अन्य स्रोत—आइन के अतिरिक्त अन्य कई स्रोत हैं, जो मुग़ल की राजधानी से दूर के इलाकों में लिखे गए थे। इनमें मुख्यतः सत्रहवीं-अठारहवीं सदियों के गुजरात, राजस्थान तथा महाराष्ट्र से मिलने वाले दस्तावेज सम्मिलित है, जिनमें सरकार की आमदनी की विस्तृत जानकारी है। साथ ही, ईस्ट इंडिया कंपनी के दस्तावेज भी है, जो पूर्वी भारत में कृषि संबंधों का उपयोगी विवरण प्रदान करते हैं। ये सभी स्रोत किसानों, जमींदारों और राज्य के बीच झगड़ों को दर्ज करते हैं। साथ ही राज्य के प्रति किसानों का दृष्टिकोण प्रस्तुत करते हैं।

प्रश्न 2. सोलहवीं-सत्रहवीं शताब्दी में सिंचाई के साधनों के विकास तथा कृषि में प्रयुक्त नवीन तकनीकों का वर्णन कीजिए।

उत्तर—सिंचाई साधनों का विकास—सोलहवीं-सत्रहवीं शताब्दी में जमीनों की बहुतायत, मजदूरों की मौजूदगी और किसानों की गतिशीलता के कारण कृषि का लगातार विकास हुआ। खेती का प्राथमिक उद्देश्य पेट भरना था, इसलिए मुख्य रूप से गेहूँ, चावल, ज्वार जैसी फसलें सबसे ज्यादा उगाई जाती थीं। इस काल में कृषि मानसून पर आधारित थी। जिन क्षेत्रों में प्रतिवर्ष 40 इंच या उससे ज्यादा बारिश होती थी, वहाँ मुख्य रूप से चावल की खेती होती थी। कम और कमतर बारिश वाले क्षेत्रों में क्रमशः गेहूँ व ज्वार-बाजरे की खेती प्रचलित थी।

यद्यपि इस काल में मानसून ही कृषि की रीढ़ थी, लेकिन कुछ ऐसी फसलें भी थीं, जिनके लिए अतिरिक्त पानी की आवश्यकता होती थी इसलिए सिंचाई के कृत्रिम उपाय भी बनाए गए। सिंचाई कार्यों के लिए राज्य से भी मदद मिलती थी। उदाहरणार्थ, उत्तर भारत में राज्य की ओर से कई नयी नहरें व नाले खुदवाए गए और कई पुरानी नहरों की मरम्मत भी करवाई गई, जैसे शाहजहाँ के शासनकाल के दौरान पंजाब में शाह नहर की मरम्मत करवाई गई।

नवीन तकनीकों का प्रयोग—यद्यपि खेती मेहनत का काम था, लेकिन किसानों द्वारा पशुबल पर आधारित नवीन तकनीकों का इस्तेमाल किया जाता था। ऐसा एक उदाहरण लकड़ी के उस हल्के हल का दिया जा सकता है, जिसको एक छोर पर लोहे की नुकीली धार या फाल लगाकर बनाया जा सकता था। ऐसे हल जमीन को बहुत गहराई तक नहीं खोदते थे, जिसके कारण तेज गर्मी के महीनों में नमी बची रहती थी। बैलों के जोड़े की सहायता से खींचे जाने वाले बरमें का उपयोग बीज बोने के लिए किया जाता था। लेकिन बीजों को हाथ से छिड़ककर बोने का तरीका अधिक प्रचलित था। मिट्टी की गुड़ाई और निराई के लिए लकड़ी के मूठ वाले लोहे के पतले धार काम में लाए जाते थे।

प्रश्न 3. मुग़लकाल में पंचायतें उच्च वर्गों के विरुद्ध कमजोर वर्गों की शिकायतों का निपटारा कैसे करती थीं ?

उत्तर—मुग़लकाल में पश्चिम भारत विशेषकर राजस्थान और महाराष्ट्र जैसे प्रांतों के संकलित दस्तावेजों में ऐसी कई अर्जियाँ हैं, जिनमें पंचायत से ऊँची जातियों या राज्य के खिलाफ जबरन कर वसूलने या बेगार वसूली की शिकायत की गई है। सामान्यतः ये अर्जियाँ ग्रामीण समुदाय में सबसे निचले स्तर के लोगों द्वारा लगायी जाती थीं। ये अर्जियाँ सामूहिक रूप से भी दी जाती थीं। इनमें किसी जाति या संप्रदाय विशेष के लोग संभ्रांत समूहों की उन माँगों के खिलाफ अपना विरोध जताते थे, जिन्हें वे नैतिक दृष्टि से अवैध मानते थे। इन माँगों में सबसे प्रमुख बहुत अधिक कर की माँग थी। अधिक कर की माँग से किसानों का दैनिक गुजारा ही जोखिम में पड़ जाता था, विशेष रूप से सूखे या अन्य विपदाओं के दौरान।

उनके अनुसार, जिन्दा रहने के लिए न्यूनतम बुनियादी साधन उनका परंपरागत हक था। वे समझते थे कि ग्राम पंचायत को इसकी सुनवाई करनी चाहिए और यह सुनिश्चित करना चाहिए कि राज्य अपना नैतिक कर्तव्य

Scanned with CamScanner

पूरा करे और न्याय करे। निचली जातियों के किसानों और राज्य के अधिकारियों या स्थानीय जमींदारों के बीच झगड़ों में पंचायत के फैसले अलग-अलग हो सकते हैं। अत्यधिक कर के मामलों में अक्सर पंचायतें समझौते का सुझाव देती थीं। समझौता न होने की स्थिति में गाँव के किसान, गाँव छोड़कर भाग जाना, जैसे उग्र कदम था। इस काल में जोतने लायक खाली जमीन आसानी से उपलब्ध थी जबकि श्रम को लेकर प्रतियोगिता थी। इसलिए गाँव छोड़कर भाग जाना खेतिहारों के लिए एक बड़ा प्रभावी हथियार था।

प्रश्न 4. मुग़लकाल में गाँवों में दस्तकारों की स्थिति का वर्णन कीजिए।

उत्तर—ग्रामीण दस्तकारों की स्थिति एवं कार्य—अंग्रेजी शासन के शुरुआती वर्षों में किए गए गाँवों के सर्वेक्षण और मराठाओं के दस्तावेज यह बताते हैं कि मुगलकाल में गाँवों में दस्तकार काफी अधिक संख्या में रहते थे। कहीं-कहीं तो कुल घरों के 25 फीसदी घर दस्तकारों के थे।

ग्रामीण समाज में किसानों और दस्तकारों के बीच अंतर करना मुश्किल होता था, क्योंकि ऐसे कई समूह थे, जो दोनों प्रकार के कार्य करते थे। खेतिहर और परिवार के सदस्य कई प्रकार की वस्तुओं के उत्पादन में भाग लेते थे, उदाहरणार्थ रंगरेजी, कपड़े पर छपाई, मिट्टी के बरतनों को पकाना, खेती के औजारों को बनाना या उनकी मरम्मत करना। उन महीनों में जब वे खेती के कार्य नहीं करते थे, जैसे—बुआई और सुहाई के बीच या सुहाई और कटाई के बीच, उस समय किसान दस्तकारी का काम करते थे।

दस्तकारों को सेवाओं की अदायगी—कुम्हार, लोहार, बढ़ई, नाई, सुनार जैसे ग्रामीण दस्तकार अलग-अलग तरीकों से अपनी सेवाएँ गाँव के लोगों को देते थे, जिसके बदले में गाँव वाले उन्हें अलग-अलग तरीकों से उन्हें सेवाओं की अदायगी करते थे। आमतौर पर या तो उन्हें फसल का एक हिस्सा दे दिया जाता या फिर गाँव में जमीन का एक टुकड़ा, सामान्य तौर पर ऐसा टुकड़ा जो कृषि योग्य होने पर बेकार पड़ी हो आमतौर पर अदायगी का तरीका पंचायतें ही निर्धारित करती थीं।

महाराष्ट्र में ऐसी जमीन, दस्तकारों की मीरास या वतन बन गई, जिस पर दस्तकारों का पुश्तैनी अधिकार था। विभिन्न स्थितियों में दस्तकार और प्रत्येक खेतिहर परिवार बातचीत करके अदायगी के किसी एक व्यवस्था पर राजी होते थे। ऐसे में विशेष रूप से वस्तुओं और सेवाओं का विनिमय होता था। उदाहरण के लिये, अठारहवीं सदी के विभिन्न स्रोत बंगाल में जजमानी व्यवस्था की जानकारी देते हैं, जिसमें जमींदार, लोहार, बढ़ई और सुनारों को उनकी सेवाओं के बदले रोज का भत्ता और खाने के लिए नकदी देते थे। यद्यपि सोलहवीं-सत्रहवीं शताब्दी में इन शब्दों का बहुत ही कम उपयोग होता था।

प्रश्न 5. सत्रहवीं शताब्दी में महिलाओं की समाज में क्या स्थिति थी ? उदाहरण देकर समझाइए।

***अथवा,* कृषि प्रधान ग्रामीण समाज में महिलाओं की स्थिति का वर्णन कीजिए।**

***अथवा,* मध्यकालीन कृषि उत्पादन में महिलाओं की भूमिका पर चर्चा कीजिए।**

उत्तर—सत्रहवीं शताब्दी में महिलाओं की सामाजिक स्थिति—सत्रहवीं शताब्दी में मुग़ल साम्राज्य में महिलाओं की स्थिति मिली-जुली थी। जहाँ एक ओर महिलाएँ उत्पादन प्रक्रिया में पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चलती थीं, वही परिवार में उन पर अधिकार जमाने का प्रयास किया जाता था। समाज में महिलाओं की स्थिति निम्नलिखित बिन्दुओं के आधार पर समझी जा सकती है—

(1) चूँकि समाज श्रम पर निर्भर करता था, इसलिए प्रजनन क्षमता के कारण महिलाओं को महत्वपूर्ण संसाधन के रूप में देखा जाता था। महिलाओं की प्रजनन क्षमता को इतना अधिक महत्व दिया जाता था कि उन पर नियंत्रण करने का प्रयास किया जाता था। (2) समाज में शादीशुदा महिलाओं की कमी थी, क्योंकि कुपोषण, बार-बार माँ बनने और प्रसव के दौरान मौत के कारण महिलाओं में मृत्युदर बहुत ज्यादा थी। इससे किसान और दस्तकार समाज में नए रिवाजों का प्रचलन प्रारंभ हुआ। कई ग्रामीण संप्रदायों में शादी के लिए दहेज के स्थान पर दुल्हन की कीमत अदा की जाती थी। तलाकशुदा महिलाएँ और विधवाएँ दोनों कानूनन शादी कर सकती थीं। (3) समाज में परिवार का मुखिया पुरुष होता था, अत: महिला पर परिवार और समुदाय के पुरुषों द्वारा नियंत्रण रखने का पूरा प्रयास किया जाता था। बेवफाई के शक पर ही महिलाओं को भयानक दंड दिए जा सकते थे। (4) राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्र आदि पश्चिमी राज्यों में मिले दस्तावेजों में ऐसी अर्जियाँ मिली हैं, जिनमें

Scanned with CamScanner

महिलाओं ने अपने पतियों पर बेवफाई का और अपनी पत्नी तथा बच्चों की अनदेखी करने का आरोप लगाया था। पुरुषों की बेवफाई हमेशा दंडित नहीं होती थी, लेकिन राज्य और ऊँची जाति के लोग अक्सर ये सुनिश्चित करने का प्रयास करते थे कि परिवार के भरण-पोषण की व्यवस्था हो जाए। (5) भूमिहर भद्रजनों में महिलाओं को पुश्तैनी संपत्ति का हक मिला हुआ था। पंजाब में ऐसे उदाहरण मिलते हैं, जहाँ महिलाएँ (विधवा महिलाएँ भी) पुश्तैनी संपत्ति के विक्रेता के रूप में ग्रामीण जमीन के बाजार में सक्रिय हिस्सेदारी रखती थीं। (6) हिंदू और मुसलमान महिलाओं को जमींदारी उत्तराधिकार में मिलती थी जिसे बेचने अथवा गिरवी रखने के लिए वे स्वतंत्र थीं। बंगाल में महिला जमींदार भी पाई जाती थी। अठारहवीं सदी की सबसे बड़ी और मशहूर राजशाही की जमींदारी की कर्ता-धर्ता एक स्त्री थी।

प्रश्न 6. आपके मुताबिक कृषि समाज में सामाजिक व आर्थिक संबंधों को प्रभावित करने में जाति किस हद तक एक कारक थी ? (NCERT)

उत्तर—सोलहवीं-सत्रहवीं शताब्दी में भारत एक कृषि प्रधान देश था। देश की 85 प्रतिशत जनसंख्या ग्रामों में निवास करती थी और प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से कृषि से संबंधित थी।

कृषि समाज में सामाजिक, आर्थिक संबंधों में जाति की भूमिका—इसे निम्नलिखित बिंदुओं के आधार पर समझा जा सकता है—

(1) जाति और अन्य जातिगत भेदभावों के कारण खेतिहर किसान कई तरह के समूहों में बँटे थे। खेतों की जुताई करने वालों में एक बड़ी तादाद ऐसे लोगों की थी, जो नीच समझे जाने वाले कामों में लगे थे या फिर खेतों में मजदूरी करते थे।

(2) खेती लायक जमीन की कमी न होने के बाद भी कुछ जाति के लोगों को सिर्फ नीच समझे जाने वाले काम ही दिए जाते थे। इनके पास संसाधन सबसे कम थे और ये जाति व्यवस्था की पाबंदियों से बंधे थे। इस तरह वे गरीब रहने के लिए मजबूर थे। इनकी हालत लगभग वैसी ही थी, जैसी कि आधुनिक भारत में दलितों की।

(3) जातिगत भेदभाव दूसरे संप्रदायों में भी फैलने लगे थे। मुसलमान समुदायों में हलालख़ोरान जैसे नीच कामों से जुड़े समूह गाँवों की सीमा से बाहर ही रह सकते थे। इसी प्रकार बिहार में मल्लाहजादाओं (अर्थात् नाविकों के पुत्र) की तुलना दासों से की जा सकती थी।

(4) समाज के निचले तबकों में जाति, गरीबी और सामाजिक हैसियत के बीच सीधा रिश्ता था, जो बीच के समूहों में नहीं थी। सत्रहवीं सदी में मारवाड़ में लिखी गई एक किताब के मुताबिक जाट भी किसान थे, लेकिन जाति व्यवस्था में उनकी स्थिति राजपूतों के मुकाबले नीची थी।

(5) इसी प्रकार सत्रहवीं सदी में राजपूत होने का दावा वृंदावन (उत्तर प्रदेश) के इलाके में गौरव समुदाय ने भी किया, जबकि वे जमीन की जुताई का काम करते थे। पशुपालन और बागवानी में अधिक लाभ के कारण अहीर, गुज्जर और माली जैसी जातियाँ सामाजिक सीढ़ी में ऊपर उठी। पूर्वी इलाकों में पशुपालन और मछुआरी जातियाँ, जैसे सद्गोप व कैवर्त भी किसानों के समान सामाजिक स्थिति प्राप्त करने लगी।

इस प्रकार यह स्पष्ट हो जाता है कि मध्यकालीन कृषि समाज में सामाजिक व आर्थिक संबंधों के निर्धारण में जाति की महत्वपूर्ण भूमिका थी। किन्तु यह भी याद रखना आवश्यक है कि मध्यम क्रम में आने वाली जातियों का सामाजिक स्तर उनकी आर्थिक स्थिति में उन्नति के साथ उन्नत होने लगा।

प्रश्न 7. सोलहवीं और सत्रहवीं सदी में जंगलवासियों की जिंदगी किस तरह बदल गई ? (NCERT)

उत्तर—सोलहवीं-सत्रहवीं शताब्दी की समसामयिक रचनाओं में जंगल में रहने वालों के लिए जंगली शब्द का उपयोग किया गया है किन्तु जंगली होने का तात्पर्य असभ्य होना नहीं था। इसका अर्थ यह था कि वे अपने दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति जंगल के उत्पादों, शिकार तथा स्थानांतरित खेती द्वारा करते थे। ये काम मौसम के अनुसार होते थे।

जंगलवासियों के जीवन में परिवर्तन—जंगलों में बाहरी ताकतों की घुसपैठ से जंगलवासियों के जीवन में कई परिवर्तन हुए।

1. वाणिज्यिक जीवन में परिवर्तन—वाणिज्यिक कृषि का असर, बाहरी कारक के रूप में जंगलवासियों

Scanned with CamScanner

के जीवन पर भी पड़ता था। जंगल के उत्पाद, जैसे—शहद, मोम और लाख की बहुत माँग थी। हाथी भी पकड़े और बेचे जाते थे। व्यापार के कारण वस्तुओं की अदला-बदली भी होती थी। कुछ कबीले भारत और अफगानिस्तान के बीच होने वाले व्यापार में भी लगे थे, जैसे पंजाब का लोहानी कबीला। इस प्रकार जंगली कबीले गाँवों और शहरों के बीच होने वाले व्यापार में भाग लेते थे।

2. सामाजिक जीवन में परिवर्तन—जंगली कबीलों के सामाजिक जीवन में कई बदलाव आए। कबीलों के समुदाय में भी, ग्रामीण समुदायों के मुखिया के समान 'सरदार' होते थे। कई कबीलों के सरदार जमींदार बन गए, कुछ तो राजा भी बन गए। ऐसी स्थिति में उन्हें अपनी सेना बनाने की आवश्यकता हुई। उन्होंने अपने ही खानदान के लोगों को सेना में भर्ती किया था फिर अपने भाई-बंधुओं से सैन्य सेवा की माँग की। सिंध इलाके की कबीलाई सेनाओं में 600 घुड़सवार और 7000 पैदल सिपाही होते थे। असम में अहोम राजाओं के अपने पायक होते थे। ये वे लोग थे जिन्हें जमीन के बदले सैनिक सेवा देनी पड़ती थी।

3. राजनैतिक परिवर्तन—कबीलाई व्यवस्था में राजतांत्रिक प्रणाली की तरफ संक्रमण पहले ही शुरू हो चुका था, किन्तु सोलहवीं शताब्दी में यह प्रक्रिया पूर्णत: विकसित हुई। उदाहरण के लिए, सोलहवीं-सत्रहवीं शताब्दी में कोच राजाओं ने पड़ोसी कबीलों के साथ एक के बाद एक युद्ध किया और उन पर अपना अधिकार जमा लिया।

4. सांस्कृतिक परिवर्तन—जंगली इलाकों में सांस्कृतिक प्रभावों का विस्तार भी बढ़ता गया। कुछ इतिहासकारों के अनुसार, जंगली क्षेत्र के नए बसे खेतिहर समुदायों ने जिस प्रकार इस्लाम को अपनाया उसमें सूफी संतों (पीर) ने महत्वपूर्ण भूमिका अदा की।

प्रश्न 8. मुगल भारत में जमींदारों की भूमिका की जाँच कीजिए। (NCERT)

उत्तर—मुगल भारत कृषि संबंधों का विवरण तब तक पूर्ण नहीं होता, जब तक कि गाँवों में रहने वाले एक ऐसे तबके की बात न कर ले, जिनकी कमाई खेतों से आती थी, किन्तु ये कृषि उत्पादन में सीधे हिस्सेदारी नहीं करते थे। ये जमींदार थे, जो अपनी जमीन के मालिक थे और जिन्हें ग्रामीण समाज में ऊँची हैसियत की वजह से कुछ खास सामाजिक व आर्थिक सुविधाएँ मिली थीं। मध्यकालीन भारत में जमींदार कृषि संबंधों के केंद्र बिन्दु थे। मुगल भारत में जमींदारों की भूमिका का वर्णन निम्नलिखित बिंदुओं के आधार पर किया जा सकता है—

(1) मुगलकालीन गाँवों के सामाजिक संबंध रूपी पिरामिड के सँकरे शीर्ष पर जमींदार आते थे। जमींदारों की बढ़ी हुई हैसियत का पहला कारण उनकी जाति थी और दूसरा कारण यह था कि वे लोग राज्य को कुछ विशेष प्रकार की सेवाएँ (खिदमत) देते थे। (2) जमींदारों ने खेती लायक जमीनों को बसाने में अगुआई की और खेतिहरों को खेती के साजो सामान व उधार देकर उन्हें वहाँ बसने में मदद की। (3) जमींदारी की खरीद-फरोख्त से गाँवों के मौद्रीकरण की प्रक्रिया में तेजी आई। (4) जमींदारों के पास अपनी व्यक्तिगत जमीनें होती थीं, जिन्हें मिल्कियत या संपत्ति कहा जाता था। अक्सर इन जमीनों पर दिहाड़ी या पराधीन मजदूर काम करते थे। जमींदार अपनी मिल्कियत की जमीनों की फसल भी बेचते थे। (5) जमींदार अक्सर बाजार (हाट) स्थापित करते थे, जहाँ किसान भी अपने फसलें बेचने आते थे। (6) यद्यपि जमींदार शोषण करने वाला तबका था, लेकिन किसानों से उनका रिश्ता पारस्परिकता, पैतृकवाद तथा संरक्षण पर आधारित था। यहाँ तक कि सत्रहवीं सदी में हुए अधिकांश कृषि विद्रोहों में राज्य के खिलाफ जमींदारों को किसानों का समर्थन प्राप्त हुआ।

प्रश्न 9. पंचायत और गाँव का मुखिया किस तरह से ग्रामीण समाज का नियमन करते थे ? (NCERT)

उत्तर—पंचायत और मुखिया—गाँव की पंचायत में बुजुर्गों का जमावड़ा होता था, जो आमतौर पर गाँव के महत्वपूर्ण लोग हुआ करते थे। इनके पास अपनी संपत्ति के पुश्तैनी अधिकार होते थे। इस पंचायत का एक सरदार या मुखिया होता था, जिसे मुकद्दम या मंडल कहा जाता था। मुखिया का चुनाव गाँव के बुजुर्गों की आम सहमति से होता था और उन्हें इस चुनाव के बाद जमींदार से अनुमति लेनी पड़ती थी।

ग्रामीण समाज का नियमन—सोलहवीं-सत्रहवीं शताब्दियों में ग्रामीण समाज के नियमन में पंचायत और गाँव के मुखिया महत्वपूर्ण भूमिका निभाते थे, जिन्हें निम्नलिखित बिंदुओं द्वारा समझा जा सकता है—

(1) पंचायत का एक बड़ा काम यह था कि गाँव में रहने वाले अलग-अलग समुदायों के लोग अपनी जाति की हदों में रहे।

Scanned with CamScanner

(2) मध्यकालीन पूर्वी भारत में सभी शादियाँ मंडल की उपस्थिति में होती थी। इस प्रकार जाति के अवहेलना रोकने के लिए लोगों के आचरण पर नजर रखना गाँव के मुखिया की जिम्मेदारी थी।

(3) पंचायत और मुखिया समाज के नियमन तथा जातिगत रिवाजों की अवहेलना रोकने के लिए जुर्माना लगाने या समुदाय से निष्कासित करने जैसे कठोर दंड दे सकते थे। समुदाय से बाहर निकालना एक कड़ा कदम था, जो एक सीमित समय के लागू किए जाते थे। इसमें दंडित व्यक्ति को गाँव छोड़ना पड़ता था। इस दौरान वह अपनी जाति और पेशे से हाथ धो बैठता था।

(4) ग्राम पंचायत के अलावा गाँव में हर जाति की अपनी पंचायत होती थी। समाज में ये पंचायतें काफी ताकतवर होती थीं। राजस्थान की जाति पंचायतें अलग-अलग जातियों के बीच दीवानी के झगड़े निपटाती थीं, वे यह तय करते थे कि शादियाँ जातिगत मानदंडों के अनुसार हो रही हैं या नहीं, और यह भी कि गाँव के आयोजनों में कर्मकांडीय वर्चस्व किस क्रम में होगा।

(5) जाति पंचायतें अपने सदस्यों के हितों की रक्षा करती थीं और उनके साथ होने वाले अन्याय के विरुद्ध आवाज उठाती थी।

इस प्रकार ग्रामीण समाज के नियमन से संबंधित अधिकांश कार्य पंचायत और मुखिया द्वारा ही किए जाते थे। फौजदारी न्याय को यदि छोड़ दें तो ज्यादातर मामलों में राज्य पंचायतों के फैसलों को मानता था।

अध्याय 6

भाग-3

उपनिवेशवाद और देहात—सरकारी अभिलेखों का अध्ययन

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

प्रश्न 1. सही विकल्प चुनकर लिखिए—

1. भारत में ईस्ट इंडिया कंपनी के शासन के स्वरूप पर ब्रिटिश संसद में गंभीर वाद-विवाद का आधार बनी—
   (a) दूसरी रिपोर्ट (b) तीसरी रिपोर्ट (c) पाँचवीं रिपोर्ट (d) आठवीं रिपोर्ट।
2. 'पाँचवीं रिपोर्ट' ब्रिटिश संसद में पेश की गई—
   (a) सन् 1813 में (b) सन् 1858 में (c) सन् 1795 में (d) सन् 1770 में।
3. राजमहल के पहाड़िया लोगों का जीवन पूरी तरह निर्भर था—
   (a) व्यापार पर (b) जंगलों पर (c) नदियों पर (d) स्थायी खेती पर।
4. राजस्व एकत्रित करते समय जमींदार का जो अधिकारी होता था उसे कहते थे—
   (a) गुमाश्ता (b) अमला (c) चौकीदार (d) मुंशी।
5. पहाड़िया लोगों द्वारा की जाने वाली खेती कहलाती थी—
   (a) स्थायी खेती (b) मिश्रित खेती (c) झूम खेती (d) बागानी खेती।
6. 1820 के दशक में इंग्लैण्ड के एक जाने-माने अर्थशास्त्री थे—
   (a) एडम हार्वे (b) डेविड रिकार्डो (c) डेविड आर्थर (d) जॉन मिल्स।
7. 'दक्कन दंगा रिपोर्ट' ब्रिटिश पार्लियामेंट में पेश की गई—
   (a) सन् 1858 में (b) सन् 1862 में (c) सन् 1878 में (d) सन् 1778 में।
8. ब्रिटेन में कपास आपूर्ति संघ की स्थापना हुई—
   (a) सन् 1857 में (b) सन् 1859 में (c) सन् 1787 में (d) सन् 1757 में।

उत्तर— 1. (c), 2. (a), 3. (b), 4. (b), 5. (c), 6. (b), 7. (c), 8. (a).

Scanned with CamScanner

अध्याय 9

विभाजन को समझना—राजनीति, स्मृति, अनुभव

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

प्रश्न 1. सही विकल्प चुनकर लिखिए—

1. भारत विभाजन का मूल कारण था—
   (a) साम्प्रदायिक सद्भावना (b) साम्प्रदायिक वैर भाव
   (c) हिंदुओं की संख्या अधिक होना (d) मुसलमानों की संख्या अधिक होना।
2. लखनऊ समझौता हुआ—
   (a) दिसम्बर, 1916 को (b) दिसम्बर, 1929 को
   (c) जनवरी, 1915 को (d) जनवरी, 1917 को।
3. बांग्लादेश की स्थापना हुई—
   (a) सन् 1952 में (b) सन् 1971 में (c) सन् 1975 में (d) सन् 1948 में ।
4. बांग्लादेश की स्थापना ने जिन्ना के किस सिद्धांत को नकार दिया—
   (a) एक राष्ट्रीय सिद्धांत (b) द्विराष्ट्र सिद्धांत
   (c) संकीर्ण राष्ट्रीय सिद्धांत (d) त्रिराष्ट्रीय सिद्धांत।
5. मुस्लिम लीग की स्थापना किस स्थान पर हुई—
   (a) लखनऊ (b) ढाका (c) अलीगढ़ (d) लाहौर।
6. हिन्दू महासभा की स्थापना हुई—
   (a) सन् 1917 में (b) सन् 1916 में (c) सन् 1915 में (d) सन् 1906 में।
7. मुसलमानों के लिए सर्वप्रथम पृथक् निर्वाचन क्षेत्र बनाए गए—
   (a) सन् 1909 में (b) सन् 1919 में (c) सन् 1935 में (d) सन् 1892 में।

उत्तर—1. (b), 2. (a), 3. (b), 4. (b), 5. (b), 6. (c), 7. (a).

प्रश्न 2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए—

1. भारत छोड़ो आन्दोलन .... था।
2. मुस्लिम लीग की स्थापना .... में ढाका में हुई।
3. .... आन्दोलन का प्रमुख कार्यक्रम कांग्रेस के कार्यक्रम का प्रचार-प्रसार करना था।
4. .... ने खादी के वस्त्र पहनकर शाही दरबार में भाग लिया था।
5. असहयोग आन्दोलन .... को आरंभ किया गया था।

उत्तर— 1. नेतृत्वविहीन, 2. 1906 ई., 3. लाल कुर्ती , 4. गणेश वासुदेव जोशी, 5. 1 अगस्त, सन् 1920।

प्रश्न 3. उचित संबंध जोड़िए—

(अ)	(ब)
1. मुस्लिम लीग की स्थापना	(a) सन् 1937
2. हिंदू महासभा का गठन	(b) मार्च, सन् 1946
3. यूनियनिस्ट पार्टी	(c) सन् 1916
4. लखनऊ समझौता	(d) सन् 1906
5. कैबिनेट मिशन	(e) सन् 1915
6. प्रांतीय विधानपालिकाओं के प्रथम चुनाव	(f) सन् 1923-47।

उत्तर—1. (d), 2. (e), 3. (f), 4. (c), 5. (b), 6. (a).

प्रश्न 4. सत्य/असत्य लिखिए—

1. विभाजन के दौरान की भयावह घटनाओं के लिए विद्वान महाध्वंस शब्द का प्रयोग करते हैं।
2. हिन्दू महासभा का गठन सन् 1906 में हुआ।

Scanned with CamScanner

3. सन् 1937 में प्रांतीय विधानपालिकाओं के गठन के लिए हुए चुनाव में मुस्लिम लीग सफल रही।
4. सन् 1946 में हुए प्रांतीय चुनाव में कांग्रेस को एकतरफा सीट मिली।
5. कैबिनेट मिशन ने द्विस्तरीय महासंघ की स्थापना का सुझाव दिया।
6. बंगाली मुसलमानों ने जिन्ना के द्वि-राष्ट्र को नकार दिया।

उत्तर—1. सत्य, 2. असत्य, 3. सत्य, 4. सत्य, 5. असत्य, 6. सत्य।

प्रश्न 5. एक शब्द / वाक्य में उत्तर दीजिए—

1. भारत विभाजन का मूल कारण क्या था ?
2. लखनऊ समझौता कब हुआ ?
3. बांग्लादेश की स्थापना कब हुई ?
4. बांग्लादेश की स्थापना ने जिन्ना के किस सिद्धांत को नकार दिया ?
5. मुस्लिम लीग की स्थापना किस स्थान पर हुई ?
6. हिन्दू महासभा की स्थापना कब हुई ?
7. मुसलमानों के लिए सर्वप्रथम पृथक् निर्वाचन क्षेत्र कब बनाए गए ?
8. मुस्लिम लीग की स्थापना किस सन् में हुई ?
9. किसने खादी के वस्त्र पहनकर शाही दरबार में भाग लिया था ?
10. असहयोग आन्दोलन कब आरंभ किया गया था ?
11. भारत में इलबर्ट के विरुद्ध किस यूरोपीय संगठन ने आन्दोलन चलाया था ?
12. महात्मा गाँधी तथा उनकी विचारधारा से प्रभावित होने वाला प्रथम जनजातीय नेता कौन था ?
13. कांग्रेस के कार्यक्रम का प्रचार-प्रसार करना किसका प्रमुख कार्यक्रम था ?
14. किस योजना को तीन जून की योजना के नाम से जाना जाता है ?
15. मुस्लिम लीग ने मुक्ति दिवस कब मनाया ?
16. महात्मा गाँधी ने व्यक्तिगत सत्याग्रह के लिए प्रथम सत्याग्रही किसे चुना ?
17. सर सैय्यद अहमद खाँ का महानतम लक्ष्य क्या था ?
18. देवबंद आन्दोलन का संबंध किस आन्दोलन से था ?
19. भारत छोड़ो आन्दोलन को भारत के दीर्घकालीन हितों के लिए हानिकारक मानने वाले नेता कौन थे ?
20. मुस्लिम लीग की सीधी कार्यवाही दिवस के आह्वान पर सबसे विभत्स नरसंहार कहाँ हुआ ?

उत्तर—1. साम्प्रदायिक बैर भाव, 2. दिसम्बर 1916 को, 3. सन् 1971 में, 4. द्विराष्ट्र सिद्धांत, 5. ढाका, 6. सन् 1915 में, 7. सन् 1909, 8. 1906 ई., 9. गणेश वासुदेव जोशी, 10. 1 अगस्त, सन् 1920, 11. यूरोपीय रक्षा संघ, 12. जैदोनांग, 13. लाल कुर्ती आन्दोलन, 14. माउण्टबेटन योजना को, 15. 22 दिसम्बर, 1939 को, 16. विनोबा भावे, 17. आधुनिक शिक्षा की उन्नति करना, 18. वहावी आन्दोलन से, 19. सी. राजगोपालाचारी, 20. कलकत्ता में।

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. 1920 व 1930 के दशकों में कौन-से मुद्दे हिन्दुओं तथा मुसलमानों के बीच तनाव का कारण बने ?

उत्तर—मुसलमानों को मस्जिद के सामने संगीत, गौ-रक्षा आन्दोलन और आर्य समाज की शुद्धि के प्रयास जैसे मुद्दों पर क्रोध आया। दूसरी ओर हिन्दू 1923 के बाद मुसलमानों के तबलीग (प्रचार) और तंजीम (संगठन) के विस्तार से उत्तेजित हुए।

प्रश्न 2. "पाकिस्तान और भारत के बीच संबंध बँटवारे की विरासत से गहरे तौर पर तय होते रहे हैं।" इसके दो परिणामों की व्याख्या कीजिए।

उत्तर—दो परिणाम—(1) दोनों ओर के कट्टरपंथियों के मन में एक-दूसरे के प्रति सदा के लिए जहर भर गया। पाकिस्तान व भारत के कट्टरपंथी आज भी समय-समय पर एक-दूसरे के विरुद्ध कड़वी बातें करते रहते हैं। (2) स्वतंत्रता के पश्चात् भारत ने धर्म-निरपेक्षता की नीति अपनाई, जबकि पाकिस्तानी एक इस्लामी राज्य बन गया।

Scanned with CamScanner

प्रश्न 3. 1878 ई. के अधिनियम के विरुद्ध भारतीयों ने अपना रोष (गुस्सा) प्रकट क्यों किया ?

उत्तर—1878 ई. के वर्नाक्यूलर प्रेस एक्ट में भारतीय भाषाओं में छपने वाले समाचार-पत्रों पर प्रतिबंध लगा दिया गया। भारतीय जनता ने इसका मजबूती से विरोध किया क्योंकि भारतीयों को लगा कि जैसे उनकी भावनाओं का गला घोंटा जा रहा था अत: उनके व्यापक रोष व विरोध को देखकर विवश होकर 1882 ई. में लॉर्ड रिपन को यह एक्ट वापस लेना पड़ा।

प्रश्न 4. 1947 के अंत तक (पंजाब में) कानून व्यवस्था का नाश हो गया था। दो उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—दो उदाहरण—(1) पूरा अमृतसर जिला, रक्तपात में डूबा हुआ था परन्तु अंग्रेज अफसरों को सूझ (समझ) नहीं पा रहा था कि स्थिति को कैसे संभाला जाए। (2) भारतीय सिपाही व पुलिस वाले हिन्दू-मुसलमान अथवा सिक्ख के रूप में आचरण करने लगे थे।

प्रश्न 5. सन् 1909 में मुसलमानों के लिए बनाए गए पृथक् चुनाव क्षेत्रों के सांप्रदायिक राजनीति पर पड़े कोई दो प्रभाव लिखिए।

उत्तर—सन् 1909 में मुसलमानों के लिए बनाए गए पृथक् चुनाव क्षेत्रों के सांप्रदायिक राजनीति पर पड़े दो प्रभाव इस प्रकार हैं—(1) पृथक् चुनाव क्षेत्रों के कारण मुसलमान विशेष चुनाव क्षेत्रों से अपने प्रतिनिधि चुन सकते थे। (2) इस व्यवस्था से राजनेता सांप्रदायिक नारे लगाकर अपना पक्ष मजबूत बनाने लगे।

प्रश्न 6. संयुक्त प्रांत में कांग्रेस पार्टी ने मुस्लिम लीग के गठबंधन सरकार बनाने के प्रस्ताव को स्वीकार क्यों नहीं किया ? दो कारण लिखिए।

उत्तर—दो कारण—(1) संयुक्त प्रांत में कांग्रेस को संपूर्ण बहुमत प्राप्त था। (2) मुस्लिम लीग जमींदारी प्रथा का समर्थन कर रही थी, जबकि कांग्रेस इसे समाप्त करना चाहती थी।

प्रश्न 7. अन्तर्राष्ट्रीय घटनाओं ने किस प्रकार भारतीय राष्ट्रवाद को प्रोत्साहन दिया ? दो उदाहरण द्वारा स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—दो उदाहरण—(1) भारत का राष्ट्रवादी आंदोलन इस बात से भी प्रभावित हुआ कि एशिया और दूसरे भागों में भी विश्वयुद्ध के बाद राष्ट्रवादी आन्दोलन सक्रिय हो रहे थे। (2) रूसी क्रांति के प्रभाव से भी राष्ट्रवादी आन्दोलन को बहुत बल मिला। इस प्रकार जनता को लगा कि यदि निहत्थे किसान और मजदूर अपने यहाँ के अत्याचारियों के विरुद्ध क्रांति कर सकते हैं तो गुलाम राज्यों की जनता भी अपनी स्वतंत्रता के लिए लड़ सकती है।

प्रश्न 8. मुस्लिम लीग ने क्रिप्स प्रस्तावों को स्वीकार क्यों नहीं किया ?

उत्तर—मुस्लिम लीग ने क्रिप्स मिशन प्रस्तावों को इसलिए ठुकरा दिया क्योंकि लीग की प्रमुख माँग 'पाकिस्तान के निर्माण' का कहीं जिक्र नहीं था।

प्रश्न 9. उर्दू कवि मोहम्मद इकबाल का 'उत्तर-पश्चिमी मुस्लिम राज्य' से क्या आशय था ?

उत्तर—सन् 1930 में मुस्लिम लीग के अधिवेशन में अध्यक्षीय भाषण देते हुए मोहम्मद इकबाल ने एक 'उत्तर पश्चिमी भारतीय मुस्लिम राज्य' की आवश्यकता पर बल दिया था, परन्तु उस भाषण में इकबाल एक नए देश के उदय पर नहीं बल्कि पश्चिमोत्तर भारत में मुस्लिम-बहुल क्षेत्रों को भारतीय संघ के अंदर एक स्वायत्त इकाई की स्थापना पर जोर दे रहे थे।

प्रश्न 10. अंग्रेजी शिक्षा भारतवासियों के लिए किस प्रकार से एक छिपा हुआ वरदान साबित हुई ?

उत्तर—अंग्रेजी शिक्षा भारतवासियों के लिए निम्नलिखित प्रकार से एक छिपा हुआ वरदान साबित हुई—

(1) अंग्रेजी भाषा ने भारतीयों के लिए नए साहित्य, गणित, विज्ञान और तकनीकी विषयों से संबंधित पुस्तकों एवं ज्ञान के द्वार खोल दिए। (2) अंग्रेजी शिक्षा ने भारतीयों में राष्ट्रीय स्वाभिमान, राष्ट्रीय चेतना तथा प्रबुद्धता जगाने में योगदान दिया।

प्रश्न 11. केबिनेट मिशन को भारत में कब और क्यों भेजा गया ?

उत्तर—केबिनेट मिशन को मार्च, 1946 में निम्नलिखित उद्देश्यों से भारत भेजा गया— (1) मुस्लिम लीग को पाकिस्तान की माँग का अध्ययन करने के लिए। (2) भारत के लिए एक उचित रूपरेखा सुझाने के लिए।

प्रश्न 12. विभाजन के दौर में स्त्रियों की इज्जत की रक्षा के लिए क्या किया गया ? कोई दो बिन्दु लिखिए।

Scanned with CamScanner

उत्तर—विभाजन के दौर में स्त्रियों की इज्जत की रक्षा के लिए निम्न कार्य किए गए—

(1) अनेक स्त्रियों ने अपने सम्मान की रक्षा के लिए आत्महत्या कर ली। (2) कई लोगों ने अपने परिवार की स्त्रियों को शत्रु के हाथ पड़ने से पहले स्वयं ही मार डाला।

प्रश्न 13. सन् 1945 में सत्ता हस्तान्तरण की वार्ता जिन्ना की किन दो माँगों के कारण टूट गई ?

उत्तर—सन् 1945 में सत्ता हस्तान्तरण की वार्ता जिन्ना की निम्न दो माँगों के कारण टूट गई—

(1) जिन्ना का कहना था कि प्रस्तावित कार्यकारिणी सभा के लिए मुस्लिम सदस्यों के चुनाव का अधिकार सिर्फ मुस्लिम लीग को ही दिया जाए। (2) जिन्ना सभा में सांप्रदायिक आधार पर वीटों की व्यवस्था भी चाहते थे।

प्रश्न 14. जिन्ना का द्विराष्ट्र सिद्धान्त क्या था ? यह किस प्रकार दृष्टि मिथ्या सिद्ध हुआ ?

उत्तर—जिन्ना का कहना था कि हिन्दू और मुसलमान दो अलग-अलग राष्ट्र हैं। अत: वे एक साथ नहीं रह सकते। उनके लिए अलग-अलग राज्य होने चाहिए, परन्तु धर्म आधारित यह सिद्धान्त सन् 1971-72 में बांग्लादेश की स्थापना से मिथ्या सिद्ध हुआ।

प्रश्न 15. आत्मकथाओं के अध्ययन में इतिहासकारों के सामने आने वाली समस्याओं का वर्णन कीजिए।

उत्तर—आत्मकथाओं के अध्ययन में इतिहासकारों के समक्ष आने वाली समस्याएँ निम्न हैं—

(1) आत्मकथाएँ लेखक अपनी स्मृति के आधार पर लिखता है। (2) लेखक जो बातें भूल गया होता है, उसे वह अनदेखा कर देता है। (3) आत्मकथा का लेखक प्राय: लोगों के सामने अपनी छवि स्वच्छ दिखाने का प्रयास करता है। उसकी त्रुटियाँ इतिहासकारों से छिपी रह जाती हैं।

प्रश्न 16. प्रेस ने किन दो तरीकों से भारत में राष्ट्रीय जागृति को बढ़ाने में सहायता की थी ?

उत्तर—प्रेस ने निम्न दो तरीकों से भारत में राष्ट्रीय जागृति को बढ़ाने में सहायता की थी—

(1) प्रेस ने ब्रिटिश सरकार की जनविरोधी नीतियों और प्रतिक्रियावादी दृष्टिकोण को जनता के समक्ष खोलकर रख दिया। (2) प्रेस से सर्वसाधारण (आम जनता) सचेत हो गया। आत्मसम्मान, राष्ट्रभक्ति, राष्ट्रीय स्वाभिमान तथा बलिदान की भावना से पूर्ण जनमत तैयार हो गया। यह संपूर्ण चमत्कार प्रेस का ही था।

प्रश्न 17. भारतीय राष्ट्रवादियों और साम्प्रदायिकतावादियों की राजनीति में आधारभूत अंतर लिखिए।

उत्तर—आधारभूत अंतर—(1) हिन्दुओं के मध्य हिन्दू महासभा जैसे साम्प्रदायिक संगठनों के बीच अस्तित्व के कारण मुस्लिम लीग के प्रचार को बहुत बल मिला। (2) भारत हिन्दुओं का देश है और हिन्दू एक अलग राष्ट्र है, यह कहकर हिन्दू साम्प्रदायिकतावादियों ने मुस्लिम साम्प्रदायिकतावादियों की बात दोहराई। अत: भारत में उन्होंने भी दो राष्ट्रों के सिद्धान्त को स्वीकार कर लिया।

प्रश्न 18. भारत का विभाजन लोगों के जीवन पर क्या प्रभाव डालता है ? उल्लेख कीजिए।

उत्तर—भारत विभाजन (14-15 अगस्त 1947) के कारण लाखों लोग उजड़ गए, बहुत से लोग शरणार्थी बनकर रह गए। उनको अपनी जिंदगी फिर से पूरी तरह नए तरीके व नए सिरे से बुननी पड़ी।

प्रश्न 19. स्वदेशी आन्दोलन के कौन-से दूरगामी प्रभाव पड़े ? लिखिए।

उत्तर—स्वदेशी आन्दोलन के निम्नलिखित दूरगामी प्रभाव पड़े—

(1) इससे भारतीय उद्योगों को बहुत बढ़ावा मिला। (2) राष्ट्रीय काव्य, गद्य-लेखन और पत्रकारिता का विकास हुआ। (3) ऐसे राष्ट्रीय शैक्षिक संस्थान खोले गए जहाँ साहित्यिक, तकनीकी या शारीरिक शिक्षा प्रदान की जाती थी।

लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. ऐसा कहना क्यों सही नहीं होगा कि बँटवारा सिर्फ सीधे-सीधे बढ़ते हुए साम्प्रदायिक तनावों के कारण हुआ ? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—पृथक् चुनाव क्षेत्रों की व्यवस्था में मुसलमान अपने चुनाव क्षेत्रों में अपने प्रतिनिधि चुनने के लिए स्वतंत्र थे। इस व्यवस्था में राजनीतिज्ञों को यह लालच रहता था कि वे सामुदायिक नगरों का प्रयोग करें और अपने धार्मिक समुदाय के व्यक्तियों को लाभ पहुँचाएँ। इस प्रकार आधुनिक राजनैतिक व्यवस्था में धार्मिक अस्मिताओं का सक्रिय प्रयोग होने लगा। चुनावी राजनीति इन अस्मिताओं को बहुत मजबूत तथा गहरा बनाने लगी। अब धार्मिक अस्मिताएँ समुदायों के बीच बढ़ रहे इन विरोधों का कारण बन गई। यद्यपि भारतीय राजनीति

Scanned with CamScanner

पर पृथक् चुनाव क्षेत्रों एवं सांप्रदायिक तनावों का बहुत प्रभाव पड़ा तो भी हमें यह नहीं मानना चाहिए कि बँटवारा इन्हीं की देन है और इन्होंने बँटवारा कराया।

प्रश्न 2. मुस्लिम लीग ने पाकिस्तान की माँग को अमलीजामा पहनाने के लिए (प्रत्यक्ष कार्यवाही) क्या फैसला किया ? संक्षेप में लिखिए।

उत्तर—1906 ई. में मुसलमानों ने 'मुस्लिम लीग' नामक संस्था की स्थापना भी कर ली फलस्वरूप हिन्दू-मुस्लिम भेदभाव बढ़ने लगा। मुस्लिम लीग ने मुस्लिम समाज में सांप्रदायिकता फैलाना प्रारंभ कर दिया। 1940 ई. तक हिन्दू-मुस्लिम भेदभाव इतना बढ़ गया कि मुसलमानों ने अपने लाहौर प्रस्ताव में पाकिस्तान की माँग की। मुस्लिम लीग की माँगें दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही थी और कांग्रेस इन्हें स्वीकार करती रही। 1916 ई. के लखनऊ समझौते के अनुसार कांग्रेस ने सांप्रदायिक चुनाव प्रणाली को स्वीकार कर लिया। कांग्रेस की इस कमजोर नीति का लाभ उठाते हुए मुसलमानों ने देश के विभाजन की माँग आरंभ कर दी।

पाकिस्तान की माँग मनवाने के लिए मुस्लिम लीग ने 'सीधी कार्यवाही' आरंभ कर दी जिससे सारे देश में सांप्रदायिक दंगे होने लगे। इन दंगों को सिर्फ भारत-विभाजन द्वारा ही रोका जा सकता था।

प्रश्न 3. भारत के विभाजन का बंगाल और पंजाब पर पड़े प्रभावों का विश्लेषण कीजिए।

उत्तर—भारत विभाजन के पश्चात् देश के विभिन्न भागों से मुस्लिम परिवार वर्षों तक पाकिस्तान की ओर पलायन करते रहे। देश के दूसरे भागों की तुलना में बंगाल में यह पलायन अधिक लम्बे समय तक चलता रहा। पंजाब के विपरीत, बंगाल में धर्म के आधार पर आबादी का बँटवारा भी उतना स्पष्ट नहीं था। बहुत से बंगाली हिन्दू, पूर्वी पाकिस्तान में जबकि बहुत से बंगाली मुसलमान पश्चिम बंगाल में ही रुके रहे। अंतत: बंगाली मुसलमानों ने पहल की और इस सिद्धांत को नकारते हुए पाकिस्तान से अलग होने का फैसला लिया। इस प्रकार सन् 1971–72 में बांग्लादेश की स्थापना हुई। कहने का तात्पर्य यह है कि धार्मिक एकता पूर्वी और पश्चिमी पाकिस्तान को एक-दूसरे से जोड़कर नहीं रख पाई।

विभाजन का सबसे खूनी और विनाशकारी रूप पंजाब में देखने को मिला। पश्चिमी पंजाब से लगभग सभी हिन्दुओं और सिक्खों को भारत की ओर तथा लगभग सभी पंजाबी भाषी मुसलमानों को पाकिस्तान की ओर खदेड़ दिया गया। यह सब कुछ सन् 1946 से 1948 के बीच मात्र दो साल तक हुआ। इस प्रक्रिया में भयंकर रक्तपात हुआ, अग्नि व लूटपाट की घटनाएँ भी हुईं।

प्रश्न 4. भारतीय राजनीति में सांप्रदायिकता आ जाने के क्या परिणाम हुए ?

उत्तर—असहयोग आन्दोलन स्थगित होने के बाद देश में सांप्रदायिक तनाव बढ़ गया। मुसलमानों ने 'तबलीग' और हिन्दुओं ने 'शुद्धि' आन्दोलन चलाए। इस तरह सांप्रदायिकता की भावना ने राजनीति में प्रवेश किया जिसके निम्नलिखित परिणाम सामने आए—

(1) सन् 1920 के बाद लीग कांग्रेस से अलग हो गई तथा उसने सरकार के समक्ष अपनी सांप्रदायिक माँगें रखी। इधर हिन्दू महासभा ने उन प्रांतों के हिन्दुओं के लिए विशेषाधिकार माँगे जहाँ वे अल्पसंख्यक थे। इसी प्रकार के विशेषाधिकार मुसलमानों ने भी माँगना प्रारंभ कर दिया। (2) सांप्रदायिक प्रवृत्तियों के कारण राष्ट्रीय आन्दोलन की प्रगति में बाधा आने लगी। अनेक दल अंग्रेजों को देश से बाहर निकालने के उद्देश्य को छोड़कर स्वयं के संप्रदाय के विषय में सोचने लगे। उनका देश की समस्याओं तथा निर्धनता से कोई संबंध न रहा। (3) देश के विभिन्न भागों में अनेक सांप्रदायिक दंगे हुए। दंगों के कारण अंग्रेजों को बल मिला तथा राष्ट्रीय हित में कमी आई। गाँधीजी ने इन दंगों के विरोध में अनशन भी किया, परन्तु फिर भी सांप्रदायिकता के विषैले रूप ने राष्ट्रीयता के महत्व को हिलाकर रख दिया। (4) तत्कालीन वायसराय ने कांग्रेसी नेताओं को सांप्रदायिक दंगों से बचाने के लिए विभाजन की योजना को स्वीकार कर लेने पर राजी कर लिया। इस प्रकार सन् 1947 में देश का विभाजन हो गया।

प्रश्न 5. भारत में मुस्लिम लीग की स्थापना के क्या कारण थे ? इसकी स्थापना में अंग्रेजों की 'विभाजन' एवं शासन करो' की नीति का क्या योगदान था ?

उत्तर—भारत में मुस्लिम लीग की स्थापना के मुख्य कारण निम्नलिखित थे—

(1) उच्च वर्ग के मुसलमान अभी तक यह नहीं भूले थे कि मुसलमानों ने वर्षों तक भारत पर शासन किया है परंतु अंग्रेजी शासनकाल में उनके सभी अधिकार छिन गए थे। वे अपनी संस्था स्थापित करके फिर से प्रभावशाली स्थान प्राप्त करना चाहते थे। (2) अलीगढ़ के मुसलमान ऐंग्लो ओरियंटल कॉलेज के मुस्लिम छात्रों को अंग्रेज प्रिंसिपल हिन्दुओं के विरुद्ध भड़काते रहते थे।

Scanned with CamScanner

अंग्रेजों की 'विभाजन एवं शासन करो' की नीति का योगदान—मुस्लिम लीग की स्थापना में अंग्रेजों की 'विभाजन एवं शासन करो' की नीति का भी मुख्य योगदान था। इस नीति पर चलते हुए उन्होंने मुसलमानों को हिंदुओं के विरुद्ध खड़ा करने का प्रयास किया। उन्होंने बताया कि कांग्रेस एक हिंदू संस्था है और वह मुस्लिम हितों के विषय में नहीं सोच सकती। अंग्रेजों की यह नीति सफल रही तथा मुसलमानों ने अपनी एक अलग संस्था बनाने का निर्णय कर लिया। यह संस्था 1906 ई. में मुस्लिम लीग के रूप में अस्तित्व में आयी।

प्रश्न 6. लखनऊ समझौते के क्या परिणाम सामने आए ? संक्षेप में लिखिए।

उत्तर—सन् 1916 का लखनऊ समझौता राष्ट्रीय दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण था। इसके परिणामस्वरूप नरमपंथी दल तथा गरमपंथी दल फिर से एक हो गए। (ये दल सन् 1907 में एक-दूसरे से अलग हो गए थे) इससे भी महत्वपूर्ण बात थी—कांग्रेस और मुस्लिम लीग में एकता की स्थापना। इस समझौते के अनुसार कांग्रेस व लीग ने अपनी कुछ माँगें मिलकर प्रस्तुत करने का निर्णय लिया। ये प्रमुख माँगे थीं—

(1) विधायी परिषदों में अधिकांश सदस्य निर्वाचित होने चाहिए। (2) इन परिषदों को पहले से अधिक शक्तियाँ दी जाएँ। (3) वायसराय की कार्यकारिणी में आधे सदस्य भारतीय हों।

प्रश्न 7. "मार्च, सन् 1947 के बाद की उथल-पुथल के बीच गाँधीजी के द्वारा लोगों में सांप्रदायिक सद्भावना बहाल करने के प्रयत्न रंग लाने लगे।" इस कथन की पुष्टि कीजिए।

उत्तर—कथन की पुष्टि—(1) मार्च, सन् 1947 से लगभग एक साल तक रक्तपात चलता रहा। इसका एक कारण यह था कि शासन की संस्थाएँ बिखर चुकी थीं। साल के अंत तक शासन तंत्र पूरी तरह नष्ट हो चुका था। पूरा अमृतसर जिला रक्तपात में डूबा हुआ था। अंग्रेज अफसरों को सूझ नहीं रहा था कि स्थिति को कैसे संभाला जाए ? (2) भारतीय सिपाही और पुलिस वाले भी हिंदू, मुसलमान या सिक्ख के रूप में आचरण करने लगे थे। इससे सांप्रदायिक तनाव और अधिक बढ़ गया। (3) सांप्रदायिक सद्भाव बहाल करने के लिए गांधीजी आगे आए और उनके प्रयत्न रंग लाने लगे। वे पूर्वी बंगाल के नोआखली (वर्तमान बांग्लादेश) से बिहार के गांवों में और उसके बाद कलकत्ता और दिल्ली के दंगाग्रस्त प्रदेशों की यात्रा पर निकल पड़े। उनका प्रयास था कि कोई रक्तपात न हो। हर जगह उन्होंने अल्पसंख्यक समुदाय हिंदू अथवा मुसलमानों को दिलासा दी।

प्रश्न 8. निजी पत्रों और आत्म कथाओं से किसी व्यक्ति के विषय में क्या पता चलता है ? ये स्रोत सरकारी ब्यौरों से किस तरह भिन्न होते हैं ?

उत्तर—निजी पत्रों तथा आत्मकथाओं से किसी व्यक्ति के बारे में केवल उन्हीं तथ्यों का पता चलता है जो वह उजागर करना चाहता है। यह भी संभव है कि वे तथ्य सत्य भी न हों। इसके अतिरिक्त हम उन तथ्यों के बारे में भी नहीं जान पाते जिन्हें लेखक छिपाना चाहता है फिर भी ये स्रोत सरकारी ब्यौरों से दो प्रकार से भिन्न है—

(1) इनकी भाषा इस बात से निश्चत होती है कि एक दिन इन्हें प्रकाशित कर दिया जाएगा। इसके विपरीत सरकारी ब्यौरों की भाषा सरकार द्वारा निश्चित होती हैं। ये ब्यौरे गोपनीय भी होते थे जिन्हें कोई नहीं देख सकता था। (2) निजी पत्रों में प्राय: यह बताया जाता है कि जनता की कठिनाइयों के लिए सरकार कहाँ जिम्मेदार है। दूसरी ओर सरकारी ब्यौरे किसी घटना अथवा दंगे आदि के लिए लोगों तथा उनके नेताओं को ही जिम्मेदार ठहराते थे। सरकार अपने ऊपर किसी भी प्रकार का कोई दोष नहीं लेती थी।

प्रश्न 9. अंतरिम सरकार की असफलता का क्या कारण था ?

उत्तर—अंतरिम सरकार की असफलता के कारण—अंतरिम सरकार में कांग्रेस और मुस्लिम लीग दोनों दलों को साथ-साथ कार्य करने का अवसर मिला; परंतु लीग कांग्रेस के हर कार्य को करने में कोई-ना-कोई रोड़ा अटका देती थी। फलस्वरूप देश में रचनात्मक कार्य किये जाने की बजाय सांप्रदायिकता पर आधारित रक्तपात और लूटमार के बेहूदा कार्य हुए। ऐसे परिणामों को देखकर कांग्रेस ने यह पूरी तरह निर्णय कर लिया कि लीग के साथ मिलकर कार्य करने से देश का विकास संभव नहीं है। अत: उन्होंने "एक आवश्यक बुराई" के रूप में भारत-विभाजन स्वीकार कर लिया।

प्रश्न 10. कांग्रेस ने भारत विभाजन को किस उद्देश्य से स्वीकार किया ?

उत्तर—कांग्रेस ने सांप्रदायिक दंगों के भय से मुक्ति पाने के लिए भी यह विभाजन स्वीकार किया था। यह भय उन्हें लॉर्ड और लेडी माउंटबेटन ने दिखाया था परंतु क्या कांग्रेस गवर्नर जनरल की बात मानने की बजाय उस पर यह दबाव नहीं डाल सकती थी कि इन दंगों के "खलनायकों" को कुचला जाए। ब्रिटिश सरकार यदि 'असहयोग आंदोलन' और 'भारत छोड़ो आंदोलन' जैसे जबरदस्त जन-आंदोलन कुचल सकती थी तो क्या वह

Scanned with CamScanner

सांप्रदायिक दंगे फैलाने वाले कुछ-एक लोगों को नहीं कुचल सकती थी। यदि ऐसा हो जाता तो भारत विभाजन अवश्य ही टल सकता था।

प्रश्न 11. गाँधीजी दिल्ली में गुरूदारा सीसगंज में सिक्खों की एक सभा को संबोधित करने कब गए, और उन्होंने वहाँ क्या देखा ? उनकी प्रतिक्रियाओं तथा दूसरी प्रतिक्रियाओं को संक्षेप में स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—28 नवंबर, सन् 1947 को गुरुनानक जयंती के मौके पर जब गांधी जी सिक्खों की सभा को संबोधित करने गए तो उन्होंने देखा कि चांदनी चौक की सड़क पर एक भी मुसलमान चलता-फिरता नजर नहीं आ रहा था। शाम को उन्होंने अपने भाषण में कहा कि 'हमारे लिए सबसे शर्मनाक बात है कि चांदनी चौक की सड़क पर एक भी मुसलमान नहीं है। गांधीजी बहुत समय तक यहीं रहे और इस सोच से तंग आकर कि मुसलमानों को शहर से बाहर खदेड़ दिया जाए। उन्होंने अनशन शुरू कर दिया। इस अनशन में उनके साथ पाकिस्तान से आए सिक्ख व हिंदू शरणार्थी भी शामिल थे।

मौलाना आजाद ने लिखा है कि इस अनशन का असर "आसमान की बिजली" जैसा रहा।

प्रश्न 12. सन् 1947 में स्वतंत्र भारत की प्रमुख समस्याओं का विश्लेषण कीजिए, जिनका उसे सामना करना पड़ा।

उत्तर—(1) सन् 1947 में स्वतंत्र भारत के सामने समस्याओं का पर्वत खड़ा था। इनमें सबसे अधिक गम्भीर समस्या थी, शरणार्थी लोगों के रहने और उनके खाने का प्रबंध। लाखों की संख्या में हिन्दू घर-द्वार छोड़कर पाकिस्तान से भारत आये थे। उनके रोजगार की भी गम्भीर समस्या थी। भारत की आर्थिक दशा इतनी कमजोर थी कि वह अंग्रेजों द्वारा बिगड़ी हुई कृषि व्यवस्था को इतनी तेजी से नहीं सुधार सकती थी कि सभी लोगों के लिए अनाज का प्रबंध हो सके। (2) देश में शांति व्यवस्था कायम करना भी जरूरी था जिससे लोगों में सद्भावना उत्पन्न हो क्योंकि लोग सांप्रदायिकता से बुरी तरह प्रभावित हो चुके थे। (3) देशी राज्यों के पुनर्गठन की समस्या भी बड़ी गम्भीर थी क्योंकि अंग्रेजों ने उन्हें स्वतंत्र करते हुए स्पष्ट कहा था कि वे चाहें तो पाकिस्तान में मिलें अथवा भारत में, अत: उन पर कोई बाहरी दबाव नहीं डाला जाएगा। हैदराबाद, जूनागढ़ जैसे भारत के अन्दरूनी भागों में भी देशी राज्य थे, उनकी पाकिस्तान से मिलने की इच्छा देखकर भारत के नेताओं को चिन्ता हुई। अत: सरदार वल्लभ भाई पटेल जैसे लौह पुरुष ने इस समस्या का समाधान बड़ी तत्परता से किया।

प्रश्न 13. कैबिनेट मिशन की योजनाओं का विस्तृत विवरण दीजिए।

उत्तर—द्वितीय महायुद्ध की समाप्ति के पश्चात् ब्रिटेन में चुनाव हुए और वहाँ पर लेबर पार्टी की सरकार बनी। प्रधानमंत्री का पद सर क्लेमेंट ऐटली ने संभाला। उन्हें भारतीयों से सहानुभूति थी और वे भारतीय समस्या का समाधान अतिशीघ्र कर देना चाहते थे इस उद्देश्य से उन्होंने भारत में एक मंत्रिमंडल अथवा कैबिनेट मिशन भेजने की घोषणा की। इस मिशन को किसी भी प्रकार का निर्णय लेने का पूरा अधिकार था।

मंत्रियों का एक मिशन मार्च 1946 में भारत पहुँचा, उसने 472 भारतीय नेताओं से भारतीय समस्या पर विचार-विमर्श किया और 16 मई, 1946 को अपनी योजना प्रस्तुत की—

(1) भारत को एक संघ मान लिया जाएगा। इसमें भारत के सभी प्रांत और देशी रियासतें शामिल होंगी। (2) संघ की एक अपनी कार्यपालिका तथा व्यवस्थापिका होगी, जिसमें प्रांतों और रियासतों के प्रतिनिधि होंगे। (3) देशी रियासतों के पास वे विषय रहेंगे जो संघ को नहीं दिए जायेंगे। (4) प्रांतों को परस्पर ग्रुप बनाने का अधिकार होगा ताकि वे सामूहिक विषयों को निश्चित कर सके। (5) भारत का संविधान बनाने के लिए एक संविधान सभा बनाई जाएगी। संविधान सभा के सदस्यों की कुल संख्या 389 होगी, इनका बँटवारा प्रांतों में उनकी जनसंख्या के आधार पर होगा। (6) अल्पसंख्यकों को उनकी जनसंख्या के अनुपात से अधिक स्थान नहीं दिये जायेंगे। (7) नवीन संविधान बनाने तक भारत में एक अंतरिम सरकार स्थापित की जायेगी इसमें सभी दलों के कुल मिलाकर 14 प्रतिनिधि लिए जाएँगे।

प्रश्न 14. भारत के विभाजन के काल में आम लोगों के दर्दनाक अनुभवों का वर्णन कीजिए।

उत्तर—भारत के विभाजन के काल में आम लोगों के दर्दनाक अनुभवों का वर्णन निम्न प्रकार है—

(1) बँटवारे के दौरान चारों ओर हिंसा व्याप्त थी, इसमें लाखों लोग मारे गए तथा बेघर हो गए। लगभग डेढ़ करोड़ लोगों को सरहद के इस पार अथवा उस पार जाना पड़ा। लोग अपनी जड़ों, मकानों, खेतों तथा कारोबार से वंचित हो गए। अपनी स्थानीय व क्षेत्रीय संस्कृतियों से दूर होकर लोगों को दोबारा अपनी स्थिति ठीक

Scanned with CamScanner

...ने के लिए मजबूर होना पड़ा। (2) बँटवारे के दौरान यह डर भी था कि औरतों की इज्जत नापाक हो सकती है, अतः औरतों को मार डाला गया। उदाहरण—रावलपिंडी जिले के थुआ खालसा गाँव में 90 औरतों ने दुश्मनों के हाथों में पड़ने की अपेक्षा अपनी मर्जी से कुएँ में कूदकर अपनी जान दे दी। (3) विभाजन के समय को 16 माह का गृहयुद्ध कहें तो अतिशयोक्ति नहीं होगी क्योंकि सरहद के दोनों ओर लोगों का सफाया कराने का काम चलता था। लोगों ने इस घटना को 'मार्शल ला', 'मारामारी' और 'रौला' अथवा 'हुल्लड़' की संज्ञा दी। कुछ विद्वानों ने इसे महाध्वंस (होलोकॉस्ट) कहा जो इसकी सामूहिक जनसंहार की भयानकता को प्रदर्शित करता है।

प्रश्न 15. सन् 1940 के प्रस्ताव के जरिए मुस्लिम लीग ने क्या माँग की ? (NCERT)

उत्तर—सन् 1940 में मुस्लिम लीग ने जो प्रस्ताव पास किया, उसमें उपमहाद्वीप के मुस्लिम-बहुल इलाकों हेतु सीमित स्वायत्तता की माँग की गई। इस अस्पष्ट से प्रस्ताव में कहीं भी विभाजन या पाकिस्तान का उल्लेख नहीं था। इस प्रस्ताव को लिखने वाले पंजाब के प्रधानमंत्री और यूनियनिस्ट पार्टी के नेता सिकंदर हयात खान ने 1 मार्च, 1941 को पंजाब असेंबली को संबोधित करते हुए यह कहा था कि वह ऐसे पाकिस्तान की अवधारणा के विरुद्ध हैं जिसमें "यहाँ मुस्लिम राज एवं बाकी जगहों पर हिन्दू राज होगा...। यदि पाकिस्तान का अर्थ है कि पंजाब में विशुद्ध मुस्लिम राज स्थापित होने वाला है तो मेरा उससे कोई संबंध नहीं है।" उन्होंने अपने विचारों को संघीय इकाइयों के लिए उल्लेखनीय स्वायत्तता के आधार पर एक ढीले-ढाले (संयुक्त) महासंघ की स्थापना के समर्थन में फिर से दोहराया।

प्रश्न 16. कुछ लोगों को ऐसा क्यों लगता था कि बँटवारा बहुत अचानक हुआ ? (NCERT)

उत्तर—मुस्लिम लीग के द्वारा पाकिस्तान की माँग पूर्ण रूप से स्पष्ट नहीं थी। उपमहाद्वीप के मुस्लिम-बहुल प्रदेशों के लिए सीमित स्वायत्तता की माँग से लेकर विभाजन होने के बीच बहुत ही कम समय लगा—सिर्फ सात साल। यह कोई नहीं जानता था कि पाकिस्तान के गठन का क्या अर्थ होगा और उससे भविष्य में लोगों का जीवन कैसा होगा। सन् 1947 में अपने मूल प्रदेश को छोड़कर नए स्थान पर जाने वाले अनेक लोगों को यही लगता था कि जैसे ही शांति की स्थापना होगी, वे वापस लौट आएँगे।

प्रारंभ में मुस्लिम नेताओं ने भी एक संप्रभु राज्य के रूप में पाकिस्तान की माँग पर विशेष बल नहीं दिया था। स्वयं जिन्ना भी पाकिस्तान की सोच को सौदेबाजी में एक पैंतरे के रूप में प्रयोग कर रहे थे। इसका उद्देश्य सरकार द्वारा कांग्रेस को मिलने वाली रियायतों पर रोक लगाना तथा मुसलमानों के लिए और अधिक छूट प्राप्त करना था। दूसरे विश्व युद्ध के कारण अंग्रेजों को स्वतंत्रता की औपचारिक वार्ताएँ कुछ समय के लिए टालनी पड़ी। परन्तु सन् 1942 में आरंभ हुए विशाल "भारत छोड़ो आन्दोलन" के परिणामस्वरूप अंग्रेजों को झुकना पड़ा और संभावित सत्ता हस्तांतरण हेतु भारतीय पक्षों के साथ बातचीत हेतु तैयार होना पड़ा।

प्रश्न 17. आम लोग विभाजन को किस तरह देखते थे ? (NCERT)

उत्तर—आम लोग विभाजन को अलग-अलग प्रकार से देख रहे थे, जो निम्नलिखित हैं—

(1) कुछ लोगों को लगता था कि शांति स्थापित होते ही, वे अपने-अपने घरों को लौट आएँगे। वे इसे कोई स्थायी प्रक्रिया नहीं मान रहे थे। (2) वे मानते थे कि पाकिस्तान के गठन का मतलब यह नहीं होगा कि जो लोग एक देश के एक हिस्से से दूसरे हिस्से में जाएँगे तो उनके साथ बाद में भी कठोरता होगी, उन्हें वीजा व पासपोर्ट जरूर प्राप्त करना होगा। (3) कुछ लोग इसे एक प्रकार का गृह युद्ध मान रहे थे। (4) मार-काट व लड़ाई-झगड़े से बचे कुछ लोग इसे मारी-मारी, मार्शल लॉ, रौला, हुल्लड़ आदि शब्दों से संबोधित कर रहे थे। (5) कुछ ऐसे भी लोग थे जो स्वयं को उजड़ा हुआ और असहाय अनुभव कर रहे थे। (6) कुछ लोगों के लिए यह विभाजन उनसे बचपन की यादें छीनने वाला तथा मित्रों व रिश्तेदारों से उनको तोड़ने वाला था।

प्रश्न 18. विभाजन के खिलाफ महात्मा गाँधी की दलील क्या थी ? (NCERT)

उत्तर—महात्मा गाँधी विभाजन के सख्त खिलाफ थे उनकी यह दलील थी कि लोगों का हृदय परिवर्तन किया जा सकता है। उनका विश्वास था कि देश में सांप्रदायिक एकता पुनः स्थापित हो जाएगी, अतः विभाजन की कोई जरूरत नहीं है। भारत के लोग हिंसा व घृणा का रास्ता छोड़कर फिर से एक साथ मिलकर अपनी समस्याओं का समाधान कर लेंगे। उनके विचार में अहिंसा, शांति, सांप्रदायिक भाईचारे के विचारों को हिन्दू और मुसलमान दोनों मानते हैं। इसलिए उन्होंने प्रत्येक स्थान पर हिन्दू और मुसलमानों को शांति बनाए रखने, परस्पर प्रेम और एक-दूसरे की रक्षा करने का आह्वान किया। गाँधी जी स्वीकार करते थे कि सैकड़ों वर्षों से हिन्दू, मुस्लिम एक साथ रहते आए हैं। वे एक जैसी वेशभूषा धारण करते हैं, एक जैसा भोजन करते हैं, इसलिए शीघ्र ही घृणा को भूलकर फिर से पहले की तरह एक-दूसरे के सुख-दुख में भाग लेंगे।

Scanned with CamScanner

प्रश्न 19. विभाजन को दक्षिणी एशिया के इतिहास में एक ऐतिहासिक मोड़ क्यों माना जाता है ? (NCERT)

उत्तर—भारत का विभाजन सन् 1947 में हुआ जिसके परिणामस्वरूप पाकिस्तान का स्वतंत्र राज्य अस्तित्व में आया। यह विभाजन भारत तथा पाकिस्तान दोनों के लिए एक ऐतिहासिक मोड़ था, क्योंकि अब तक दोनों का इतिहास एक ही था। परन्तु अब यह दो अलग-अलग धाराओं में बहने लगा। ये निम्नलिखित तथ्य भी इस बात की पुष्टि करते हैं—

(1) यह बँटवारा संप्रदायों के नाम पर हुआ था। इससे पहले ऐसा बँटवारा कभी नहीं हुआ था। (2) पहली बार दोनों देशों के लोगों की बदली हुई थी। भारत से ज्यादातर मुसलमान पाकिस्तान चले गए, जबकि पाकिस्तानी प्रदेश में बसे बहुत से हिन्दू एवं सिख भारत आ गए। (3) स्वतंत्रता के पश्चात् भारत ने धर्म-निरपेक्षता की नीति अपनाई, जबकि पाकिस्तान एक इस्लामी राज्य बन गया। (4) दोनों ओर के कट्टरपंथियों के मन में एक-दूसरे के प्रति सदा के लिए जहर भर गया। पाकिस्तान तथा भारत के कट्टरपंथी आज भी समय-समय पर एक-दूसरे के खिलाफ जहर उगलते रहते हैं।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. सन् 1937 के प्रांतीय चुनावों ने भारत विभाजन की भूमिका किस प्रकार तैयार की ?

***अथवा,* सन् 1937 में हुए प्रांतीय चुनावों तथा उसके परिणामों एवं प्रभावों की चर्चा कीजिए।**

उत्तर—सन् 1937 में पहली बार प्रांतीय सांसदों के गठन के लिए चुनाव कराए गए। इन चुनावों में मताधिकार केवल 10 से 12 प्रतिशत लोगों को प्राप्त था।

परिणाम—इन चुनावों में कांग्रेस के लिए परिणाम अच्छे रहे। उसने 11 में से 5 प्रांतों में पूर्ण बहुमत प्राप्त किया और 7 में अपनी सरकारें बनाईं। परन्तु मुसलमानों के लिए आरक्षित चुनाव क्षेत्रों में उसका प्रदर्शन अच्छा नहीं रहा। मुस्लिम लीग भी इन क्षेत्रों में बहुत अच्छे परिणाम नहीं दिखा पाई। उसे इस चुनाव में कुल मुस्लिम मतों का केवल 4·4 प्रतिशत भाग ही प्राप्त हुआ। उत्तर-पश्चिम सीमा प्रांत में उसे एक भी सीट नहीं मिली। पंजाब की आरक्षित 84 सीटों में से केवल 2 प्राप्त हुई और सिंध में 33 में से केवल 3।

प्रभाव—(1) संयुक्त प्रांत (वर्तमान उत्तर प्रदेश) में मुस्लिम लीग कांग्रेस के साथ मिलकर सरकार बनाना चाहती थी परंतु कांग्रेस ने उसके प्रस्ताव को ठुकरा दिया, कुछ विद्वानों का मत है कि इससे लीग के सदस्यों में यह बात घर कर गई कि यदि भारत अविभाजित रहा तो मुसलमानों के हाथ में सत्ता कभी नहीं आ पायेगी। (2) मुस्लिम लीग का मानना था कि मुसलमानों का प्रतिनिधित्व कोई मुस्लिम पार्टी ही कर सकती है, परंतु जिन्ना की यह जिद् कि मुस्लिम लीग को मुसलमानों का "एकमात्र प्रवक्ता" माना जाए, उस समय बहुत कम लोगों को स्वीकार थी। (3) मुस्लिम लीग संयुक्त प्रांत, बंबई और मद्रास में लोकप्रिय थी परंतु बंगाल में अभी भी उसका सामाजिक आधार काफी कमजोर था उत्तर-पश्चिम सीमा प्रांत तथा पंजाब में तो न के बराबर था, आश्चर्य की बात यह है कि दस साल बाद इन्हीं सब प्रांतों से पाकिस्तान बनाया गया। (4) कांग्रेसी मंत्रालयों ने भी मुस्लिम लीग और कांग्रेस के बीच की खाई को गहरा कर दिया, उसने गठबंधन सरकार बनाने के प्रस्ताव को खारिज कर दिया क्योंकि लीग-जमींदारी प्रथा का समर्थन कर रही थी। (5) कांग्रेस के धर्म निरपेक्ष और रैडिकल बयानों से रूढ़िवादी मुसलमान और भूस्वामी तो चिंता में ही पड़ गए तथा कांग्रेस भी मुसलमानों को अपनी ओर आकर्षित करने में सफल नहीं हो पायी। (6) तीस के दशक में कांग्रेसी नेता धर्मनिरपेक्षता पर अधिक बल देने लगे थे परंतु कांग्रेस में ऊपर से नीचे तक अर्थात् मंत्री तक भी इन विचारों पर पूरी तरह से सहमत नहीं थे। (7) हिंदू महासभा और आर.एस.एस. की शक्ति बढ़ती जा रही थी। तीस के दशक में ही उसने नागपुर से बढ़ते हुए संयुक्त प्रांत पंजाब और देश के अन्य भागों में अपना प्रभाव बना लिया था, देश का ऐसा सांप्रदायिक वातावरण भावी विभाजन की ओर ही संकेत कर रहा था।

प्रश्न 2. सन् 1930 और 1940 के दशक में सांप्रदायिकता के विकास की विवेचना कीजिए।

उत्तर—सन् 1930 और 1940 के दशक में देश में अंग्रेजी नीतियों के परिणामस्वरूप सांप्रदायिक तत्व तेजी से बढ़ने लगे। यह बात राष्ट्रवादी आंदोलन की एकता के लिए खतरा बन गई। यद्यपि इस आंदोलन के नेताओं ने सांप्रदायिक भावना के प्रसार को रोकने के लिए कई प्रयास किए, तो भी वे इस पर नियंत्रण न कर सके

सांप्रदायिकता का विकास—देश में सांप्रदायिकता के विकास के मुख्य कारण निम्नलिखित थे—

(1) सीमित मताधिकार तथा अलग-अलग चुनाव मंडलों के आधार पर विधान सभाओं के लिए जो चुनाव

Scanned with CamScanner

हुए उससे एक बार फिर सांप्रदायिक भावनाएँ उत्पन्न हो गईं। (2) कांग्रेस अल्पसंख्यकों के लिए सुरक्षित सीटों में अनेक सीटें जीतने में असफल रही। मुसलमानों के लिए कुल 482 सीटें आरक्षित थीं परंतु कांग्रेस को केवल 26 सीटें ही मिल सकीं। इसमें भी 15 केवल पश्चिमोत्तर सीमा प्रांत में मिली। हिंदू महासभा भी बुरी तरह हारी। जमींदारों और सूदखोरों की पार्टियों की भी यही दशा हुई। (3) कांग्रेस ने एक मूलगामी कृषि कार्यक्रम अपना लिया था और किसान आंदोलन तेजी से फैल रहे थे। इन दो बातों को देखकर जमींदार और सूदखोर स्वार्थ सिद्धि के लिए सांप्रदायिक पार्टियों को अपना समर्थन देने लगे। उन्होंने समझ लिया कि आम जनता की व्यापक राजनीतिक भागीदारी के युग में उनके हितों की रक्षा संभव नहीं होगी। इस प्रकार सांप्रदायिक पार्टियाँ मजबूत होने लगीं और जिन्ना के नेतृत्व में मुस्लिम लीग कांग्रेस का घोर विरोध करने लगी। अब उसने यह प्रचार करना आरंभ कर दिया कि मुस्लिम लीग, कांग्रेस अल्पसंख्यकों के बहुसंख्यक हिंदुओं में समा जाने का खतरा है। उसने इस तर्कहीन सिद्धांत का प्रचार किया कि हिंदू और मुसलमान दो अलग-अलग राष्ट्र हैं और उनका एक साथ रह सकना असंभव है।

पाकिस्तान की माँग—सन् 1940 में मुस्लिम लीग ने देश को दो भाग करने का प्रस्ताव दिया साथ ही यह भी कहा कि पाकिस्तान नाम का एक अलग राज्य बनाया जाए। हिंदू महासभा जैसे सांप्रदायिक संगठनों के कारण मुस्लिम लीग के प्रचार को बल मिला, इसी समय कुछ हिंदू संप्रदायवादियों ने भी यह प्रचार किया कि हिंदू एक अलग राष्ट्र है और भारत हिंदुओं का देश है, इससे मुस्लिम लीग के अलग राष्ट्र के सिद्धांत को बल मिला।

सांप्रदायिक संगठनों की गतिविधियाँ—रोचक बात यह है कि हिंदू और मुस्लिम संप्रदायवादियों ने कांग्रेस के विरुद्ध एक-दूसरे से हाथ मिलाने में भी कोई संकोच नहीं किया। पश्चिमोत्तर सीमा प्रांत, पंजाब, सिंध और बंगाल में हिंदू संप्रदायवादियों ने कांग्रेस के विरुद्ध मुस्लिम लीग तथा अन्य सांप्रदायिक संगठनों का मंत्रिमंडल बनाने में सहायता की, सरकार समर्थक रवैया अपनाना भी सभी सांप्रदायिक संगठनों की एक साझा विशेषता थी। सांप्रदायिक संगठन जनता की सामाजिक और आर्थिक माँगें उठाने में कतराते रहे। इस संबंध में वे ऊँचे वर्गों के निहित स्वार्थों का ही प्रतिनिधित्व करने लगे।

प्रश्न 3. सन् 1947 में भारत के विभाजन के लिए उत्तरदायी कारणों की व्याख्या कीजिए तथा सन् 1947 के भारतीय स्वतंत्रता अधिनियम की मुख्य विशेषताओं पर विचार प्रकट कीजिए।

उत्तर—भारत का बँटवारा कई कारणों से हुआ कुछ कारण निम्नलिखित हैं—

1. अंग्रेजों की 'फूट डालो और शासन करो' की नीति—सन् 1909 में मुसलमानों के लिए अलग चुनाव क्षेत्र बनाए गए, जिनका सन् 1919 में विस्तार किया गया इस व्यवस्था में राजनीतिज्ञों को लालच रहता था कि वे सामुदायिक नारों का प्रयोग करें और अपने धार्मिक समुदाय के व्यक्तियों को नाजायज रूप से फायदा पहुँचाएँ। इस प्रकार उन्होंने हिंदुओं और मुसलमानों के बीच फूट डालने का काम किया।

2. मुस्लिम लीग की स्थापना—मुस्लिम लीग की स्थापना के पीछे का मुख्य कारण मुसलमानों द्वारा अंग्रेजों से प्रेरणा और संरक्षण मिलना था। अपने हितों के लिए जिन्ना जैसे मुसलमान, अंग्रेजों के भक्त बन गये। जिन्ना ने बाद में स्पष्ट कर दिया कि हिंदू और मुसलमान दो अलग-अलग राष्ट्र हैं, इसी के परिणामस्वरूप सन् 1940 में मुस्लिम लीग द्वारा पाकिस्तान की माँग की गई।

3. कांग्रेस की कमजोर नीति—कांग्रेस मुस्लिम लीग की अनुचित माँगों को मानकर उसे बढ़ावा देती रही। सन् 1916 के लखनऊ समझौते में कांग्रेस ने मुसलमानों के लिए अलग प्रतिनिधित्व को स्वीकार करके संप्रदायवाद को प्रोत्साहित किया, इसके पश्चात् खिलाफत आंदोलन को असहयोग आंदोलन में शामिल करना और सी.आर. योजना में लीग को अधिक रियायतें देना कांग्रेस की दुर्बल नीति के परिणाम थे।

4. सांप्रदायिक दंगे—पाकिस्तान की माँग मनवाने के लिए मुस्लिम लीग ने 'सीधी कार्यवाही' आरंभ कर दी और इसके परिणामस्वरूप समूचे देश में सांप्रदायिक दंगे होने लगे। इन दंगों को अब केवल भारत विभाजन के द्वारा ही रोका जा सकता था।

भारतीय स्वतंत्रता अधिनियम, 1947—माउंटबेटन योजना को 18 जुलाई को ब्रिटिश सम्राट ने विधिवत् स्वीकृति दे दी। इस अधिनियम में कुल 20 धाराएँ थीं, इनमें से कुछ प्रमुख धाराएँ निम्नलिखित हैं—

(1) 15 अगस्त, 1947 को भारत और पाकिस्तान नामक दो हिस्से बना दिये जायेंगे और ब्रिटिश सरकार उन्हें सत्ता सौंप देगी। (2) दोनों अधिराज्यों का वर्णन किया गया और यह भी बताया गया कि बंगाल और पंजाब की विभाजन रेखा निश्चित करने के लिए एक सीमा आयोग होगा। (3) दोनों अधिराज्यों की संविधान सभाओं को

Scanned with CamScanner

शासन की सत्ता सौंपी जायेगी, इन्हें अपना संविधान बनाने का पूर्ण अधिकार होगा। (4) इन दोनों अधिराज्यों को अधिकार होगा कि वे ब्रिटिश राष्ट्रमंडल के सदस्य रहें या त्याग दें। (5) दोनों के लिए अलग-अलग गवर्नर जनरल होगा जिसकी नियुक्ति उनके मंत्रिमंडल की सलाह से होगी। (6) भारत मंत्री का पद समाप्त कर दिया जायेगा। (7) जब तक तय विधान के अनुसार चुनाव होंगे वर्तमान प्रांतीय विधानमंडल कार्य करेंगे। (8) भारतीय नागरिक सेवाओं के सदस्य अधिकारों को बनाए रखा जाएगा। (9) 15 अगस्त, 1947 से ब्रिटिश सरकार की देशी रियासतों पर सर्वोच्चता को समाप्त कर दिया जाएगा इसके पश्चात् वे अपनी इच्छानुसार भारत और पाकिस्तान में चाहें तो मिल सकती हैं अथवा स्वतंत्र रह सकती हैं।

प्रश्न 4. द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद अंग्रेजों के भारत के प्रति दृष्टिकोण में परिवर्तन आने के क्या कारण थे ? सविस्तार विवेचना कीजिए।

उत्तर—द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद अंग्रेजों के भारत के प्रति दृष्टिकोण में परिवर्तन आने के निम्नलिखित कारण थे—

1. भारतीयों का राष्ट्र प्रेम—शताब्दी के चौथे दशक में देश के सभी राजनीतिक दलों व समाज के सभी वर्गों में देश की स्वतंत्रता की माँग फैल गई। हिन्दु, मुसलमान, सिक्ख, राजनीतिक नेता, सरकारी कर्मचारी, अधिकारी सभी विदेशी सरकार से मुक्त होना चाहते थे। सभी भारतवासियों में देश-प्रेम की भावनाएँ उमड़ पड़ीं। चारों ओर अंग्रेजों का विरोध-ही-विरोध हो रहा था। सेना में भी विद्रोह की भावनाएँ उठने लगीं। ऐसे में अंग्रेजों का भारत छोड़कर जाना निश्चित ही लगता था।

2. द्वितीय महायुद्ध के बाद अंग्रेजों की कमजोर स्थिति—दूसरे महायुद्ध के बाद अंग्रेजों की स्थिति कमज़ोर पड़ गई। इस युद्ध में इनको काफी आर्थिक व जान-माल का नुकसान उठाना पड़ा। उनकी अर्थव्यवस्था चरमरा गई थी। उनके बड़े-बड़े उद्योग ठप्प हो गए। उनके पास भारत पर नियंत्रण बनाए रखने के लिए साधनों का अभाव था। इस कारण सन् 1945 के बाद उन्होंने भारत छोड़ने का निर्णय लेना ही उचित समझा।

3. एशिया में राष्ट्रीय भावना की जागृति—दूसरे महायुद्ध के बाद एशिया के अनेक देशों में राष्ट्र-प्रेम की भावना तीव्र हो उठी। वे आज़ादी के अधिकार की माँग करने लगे। एशिया के अनेक देशों में स्वतंत्रता आंदोलन शुरू हो गए। भारतीयों में यह कुछ अधिक तेज़ था। अत: अंग्रेजों ने अब भारतीयों को स्वतंत्रता प्रदान करना ही उचित समझा।

4. ब्रिटेन का जनमत भारत के पक्ष में—ब्रिटेन के शिक्षित व उदार विचारों वाले लोग भी भारत की स्वतंत्रता के पक्ष में थे। वे भारतीयों की माँग को उचित ठहराने लगे और भारतीयों से सहानुभूति रखने लगे। ऐसी परिस्थिति में ब्रिटिश सरकार ने भारतीयों को स्वतंत्रता प्रदान करना ही उचित समझा।

5. भारत में शासन अब लाभकारी न था—दूसरे महायुद्ध के बाद ब्रिटेन में निर्मित वस्तुओं की भारत में माँग काफी कम हो गई। अब तक भारत में भी छोटे-बड़े उद्योग स्थापित हो चुके थे। अब अंग्रेजों के आर्थिक उद्देश्य की पूर्ति नहीं हो रही थी। अब उन्हें भारतीयों पर अधिकार बनाए रखने की बजाय उनसे मित्रतापूर्ण संबंध बनाना अधिक लाभकारी लगता था।

6. लेबर पार्टी की सरकार—सन् 1945 के चुनावों में लेबर पार्टी की सरकार बनी। लेबर पार्टी ने चुनाव से पहले कई बार घोषणा की थी कि उसके सत्ता में आने के बाद वह सच्चे मन से भारत की समस्याओं का समाधान करेगी। परिणामस्वरूप सत्ता में आने के बाद इसने भारत में अपना एक कैबिनेट मिशन भेजा और अं में भारत को स्वतंत्रता प्रदान करने का निर्णय ले ही लिया।

प्रश्न 5. ब्रिटिश भारत का विभाजन (बँटवारा) क्यों किया गया ? **(NCER**

उत्तर—निम्नलिखित कारणों ने ब्रिटिश भारत के विभाजन में योगदान दिया—

1. ब्रिटिश कूटनीति—अधिकांश विद्वान इतिहासकारों के विचारानुसार भारत विभाजन का सर्वाधि महत्वपूर्ण कारण था—ब्रिटिश कूटनीति। ब्रिटिश प्रशासकों ने प्रारंभ से ही 'फूट डालो और शासन करो' की नी का अनुसरण किया। भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन को कमजोर करने के लिए वे मुसलमानों की सांप्रदायिक भावनाओं को उत्तेजित करते रहे। 1905 ई. में बंगाल का विभाजन, 1906 ई. में मुस्लिम लीग की स्थापना और 1909 ई. में सांप्रदायिक चुनाव प्रणाली का प्रारंभ और विस्तार अंग्रेजों की 'फूट डालो और शासन करो' की नीति के ज्वलंत उदाहरण थे।

Scanned with CamScanner

ब्रिटिश प्रशासकों की इस नीति से मुसलमानों में सांप्रदायिक भावनाओं का विकास होने लगा। ये अपने हितों की रक्षा के लिए अपने लिए एक पृथक् राष्ट्र की माँग करने लगे, जिसकी चरम परिणति पाकिस्तान के निर्माण में हुई।

2. कांग्रेस की लीग के प्रति तुष्टिकरण की नीति—भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने लीग के प्रति तुष्टिकरण की नीति अपनाई जो देश की अखंडता के लिए घातक सिद्ध हुई। कांग्रेस ने बार-बार लीग को संतुष्ट करने का प्रयत्न किया जिसके परिणामस्वरूप लीग की अनुचित माँगें दिन-प्रतिदिन बढ़ने लगीं। मुस्लिम लीग के प्रति कांग्रेस की शिथिल एवं त्रुटिपूर्ण नीति से जिन्नाह को विश्वास हो गया था कि परिस्थितियों से विवश होकर कांग्रेस विभाजन के लिए तैयार हो जाएगी और अन्तत: ऐसा ही हुआ भी।

3. सांप्रदायिक दंगे—1946 ई. के चुनावों के पश्चात् लीग ने पाकिस्तान की स्थापना के लिए प्रबल आन्दोलन प्रारंभ कर दिया था। 16 अगस्त, 1946 ई. को लीग ने 'प्रत्यक्ष कार्यवाही दिवस' मनाया जिसके परिणामस्वरूप बंगाल, बिहार और पंजाब में भयंकर हिन्दू-मुस्लिम दंगे हो गए। संपूर्ण देश गृहयुद्ध की आग में जलने लगा। जैसे-जैसे सांप्रदायिक तनाव बढ़ता गया, भारतीय सिपाही और पुलिस वाले भी अपने पेशेवर प्रतिबद्धता को भूलकर हिन्दू, मुसलमान अथवा सिक्ख के रूप में आचरण करने लगे। अत: देश को भयंकर विनाश से बचाने के लिए कांग्रेस ने विभाजन को स्वीकार कर लेना ही श्रेयस्कर समझा।

4. कांग्रेस की भारत को शक्तिशाली बनाने की इच्छा—मुस्लिम लीग की गतिविधियों से यह स्पष्ट हो चुका था कि लीग कांग्रेस से किसी भी रूप में समझौता अथवा सहयोग करने के लिए तैयार नहीं थी। कांग्रेस के प्रमुख नेता यह भली-भाँति समझ चुके थे कि स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् भी लीग कांग्रेस के प्रत्येक कार्य में रुकावट डालेगी तथा तोड़-फोड़ की नीति अपनाएगी, जिसके परिणामस्वरूप देश निरन्तर दुर्बल होता जाएगा। अत: देश को विनाश से बचाने के लिए उन्होंने विभाजन को स्वीकार कर लेना अधिक उचित समझा।

5. लॉर्ड माउंटबेटन के प्रयास—मुस्लिम लीग द्वारा पाकिस्तान के निर्माण के लिए प्रत्यक्ष कार्यवाही प्रारंभ कर दिए जाने के कारण सम्पूर्ण देश में हिंसा की ज्वाला धधकने लगी थी। अत: लॉर्ड माउंटबेटन ने पंडित जवाहरलाल नेहरू और सरदार वल्लभभाई पटेल को विश्वास दिला दिया कि मुस्लिम लीग के बिना शेष भारत को शक्तिशाली और संगठित बनाना अधिक उचित होगा। कांग्रेसी नेताओं को गृहयुद्ध अथवा पाकिस्तान इन दोनों में से किसी एक का चुनाव करना था। उन्होंने गृहयुद्ध से बचने के लिए पाकिस्तान के निर्माण को स्वीकार कर लिया। इस प्रकार, अनेक कारणों के संयोजन ने देश के विभाजन को अपरिहार्य बना दिया था।

प्रश्न 6. बँटवारे के समय औरतों के क्या अनुभव रहे ? **(NCERT)**

उत्तर—बँटवारे के समय औरतों के बहुत ही कटु अनुभव रहे—

(1) उनके साथ बलात्कार हुए और उनका अपहरण करके उन्हें बार-बार खरीदा और बेचा गया। (2) उन्हें अजनबियों के साथ जिंदगी बिताने के लिए मजबूर किया गया। (3) परिवार के सम्मान की रक्षा के नाम पर उन्हें मार डाला गया अथवा मरने के लिए विवश किया गया। इस कारनामे को बहादुरी और शहीदी का नाम दिया गया। (4) कई औरतों ने अपनी इज्जत की रक्षा के लिए आत्महत्या कर ली। उन्हें शत्रु के हाथ में पड़ना पसंद नहीं था। (5) उनके बारे में जो निर्णय लिए गए उनमें उनकी सलाह नहीं ली गई। दूसरे शब्दों में अपने जीवन के बारे में निर्णय लेने के उनके अधिकार की उपेक्षा कर दी गई। (6) भारत तथा पाकिस्तान दोनों ही देशों की सरकारों ने औरतों के प्रति कोई संवेदनशील रुख नहीं अपनाया। कई मामलों में घर बसा चुकी औरतों को भी पुन: उनके देश वापिस भेज दिया गया। इस प्रकार उनकी जिंदगी बरबाद हो गई और परिवार उजड़ गया।

प्रश्न 7. बँटवारे के सवाल पर कांग्रेस की सोच कैसे बदली ? **(NCERT)**

उत्तर—कांग्रेस विभाजन के विरुद्ध थी। परन्तु मार्च, 1947 में कांग्रेस हाईकमान ने पंजाब को मुस्लिम-बहुल और हिन्दू/सिक्ख-बहुल दो भागों में बाँटने के प्रस्ताव को मंजूरी दे दी। कांग्रेस ने बंगाल के संबंध में भी यही सिद्धांत अपनाने का सुझाव दिया। अंकों के खेल में उलझकर पंजाब के बहुत से सिक्ख और कांग्रेसी नेता भी यह मानने लगे कि अब विभाजन कड़वी सच्चाई बन चुका है, जिसे टाला नहीं जा सकता। उन्हें लगता था कि वे अविभाजित पंजाब में मुसलमानों से घिर जाएँगे और उन्हें मुस्लिम नेताओं की दया पर जीना पड़ेगा। इसलिए वे भी विभाजन के पक्ष में हो गए। बंगाल में भी भद्रलोक बंगाली हिंदुओं का जो वर्ग सत्ता को अपने हाथ में रखना चाहता था, वह यह सोचता था कि विभाजन न होने पर वे मुसलमानों के स्थायी गुलाम बनकर रह जाएँगे।

Scanned with CamScanner